# हदियाए-कौषर

जनाब फ़ातिमा ज़हरा(स.) के यौमे विलादत की

मुनासिबत से आप के फज़ाईल और क़साइद का मजमूआ

मुरत्तिब

खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

# हदियाए कौषर

जनाब फातिमा ज़हरा (स.) के यौमे विलादत
की मुनासिबत से आप के फज़ाईल और
क़साइद का मजमुआ़

मुरत्तिब
**खुसरो कासिम**

रस्मुल ख़त हिन्दी
**डो. शहेज़ाद क़ाज़ी**

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़े मुसन्निफ़ महफ़ूज़ हैं.

नाम किताब : **हदियए कौषर**

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी
फाउन्डर एन्ड चेरमेन
ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह),
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

सने ईशाअत : (फरवरी-2019, 20-जमादिल आख़िर 1440)

कम्पोज़िंग एण्ड प्रिन्टींग : इमाम जा'फर सादीक़ फाउन्डेशन(अहले सुन्नत),
मोडासा, गुजरात, इन्डिया.

ब इसाले सवाब
**My Grand Mother**
मरहूमा ख़ोख़र जुबेदाख़ातून बिन्ते हुसैनमीयां

:: मिलने का पता ::
**इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)**
मोडासा, गुजरात, इन्डिया.
**(M) 85110 21786**

कारिइन से गुज़ारिश है कि इस किताब में या ***इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन*** की जानिब से शाया कर्दा किसी भी किताब में किसी भी तरह की ग़लती पाओं तो फाउन्डेशन से राब्ता काइम करके इतिलाअ फरमाएं । ताकि आइन्दा इशाअत में उन गलतीयों को दुरुस्त किया जा सके ।

# अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"हदियए कौषर"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार, ख़ास कर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो। ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफ्सुसझकिया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया। एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए। कहीं हबीब इब्न मुजाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई, इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफा, इमाम शाफीई बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख्वाजा गरीब नवाज, निज़ामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख़्दुम माहिम और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए। वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अहले बैत नासबियत व ख़ारजियत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे।

इस ज़माने में भी नासबियत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फजाइले अहले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अहले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबियत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद

व जान-माल के डर से फजाइले अह्ले बैत ﷺ छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अह्ले बैत ﷺ नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अह्ले बैत ﷺ से दूर किया जा रहा है । कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत ﷺ पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबीए करीम ﷺ ने फरमाया,

**"मैं जिसका मौला हूँ अली ﷺ भी उसके मौला है"**

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी) (कश्फुल अस्तार, लि-हैस़मी) (रावी सिक्का)

**मुख़्तसर हदीस :**

**"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले बैत ﷺ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले ।"**

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अह्ले बैत ﷺ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ﷺ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ﷺ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिख़कर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

इस छोटे से रिसाले में अह्ले बैत ﷺ, अह्ले मुबाहिला ﷺ की वो शख़्सियत, नबी ﷺ की बेटी, वसी की ज़ौजा, सिब्तैन की माँ, इमामों की दादी, यौमे जज़ा में अर्श के सामने फरियाद करनेवाली, आख़िरत और दुनिया की औरतों की सरदार, अली मुर्तजा ﷺ की अहलिया, मुन्तख़ब शख़्स की माँ, मुस्तफा की साहबज़ादी, जिसकी तारीफ इन्जील में की गई, मरियम ﷺ के हमपल्ला, हर ख़ैर का इल्म रखनेवाली, सबसे मुकर्रम मुहम्मद

ﷺ की बेटी, साहिबे वही व कुर्आन का मोती, जिसके दादा ख़लील, सय्यिदा, तय्यिबा, ताहिरा, बतूल, फ़ातिमा ज़हरा ؓ की शान बयां की गई है।

सय्यिदा ज़हरा ؓ तो वो शख़्सियत है "**जिसके गज़बनाक होने से अल्लाह ﷻ गज़बनाक होता है और जिसके ख़ूश होने से अल्लाह ﷻ ख़ूश होता है।**" सय्यिदा ज़हराए पाक ؓ की शान को खुदा ने एसी बलन्द की है कि हम जैसे गुनहगार, ख़ताकार, कमअक़्ल इन्सानो की हैसियत ही नहीं की हम उनकी शान बयान करे कि जिनके बारे में **हुज़ूर नबीए करीम ﷺ फरमाते है।**

"**कयामत के दिन एक निदा देनेवाला पर्दे के पीछे से आवाज देगा। ए अह्ले महशर। अपनी निगाहें झुका लो ताकि फातिमा ؓ बिन्ते मुस्तफा ﷺ गुज़र जाए।**"

(मुस्तदरक हाकिम रकम 4728) (असदुल गाबा, जिल्द-7, सफा-220)

अल्लाह ﷻ हमको, हमारी ता-कयामत तक की नस्लों को सय्यिदा फातिमा ज़हरा ؓ के बच्चों की गुलामी अता करे. आमीन...

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताब के प्रकाशन का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के मोमिन व मो'मिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझमें बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत ؑ शिखायी, उनकी रुह को अता फरमाये और उनकी मग़फिरत फरमाये, सय्यिदा जहराए पाक ؓ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ो में शुमार करें। आमीन....

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीबे अह्ले बैत ؑ मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ؑ की शफाअत नसीब फरमाए !

**डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी**
20 जमादील आखिर हिजरी 1440

# फेहरिस्त

# 1. तआरुफे मुरत्तिब

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबियत और ख़्वारजियत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली ؑ को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने खुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के Mechanical Engineering Department के Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़्वारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बते अहले बैत ؑ और मुहब्बते अली ؑ ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अहले सुन्नत का 1400 साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने "शाने अहले बैत ؑ" में सिर्फ 20 (बीस) सालो में 180 से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अहले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अहले सुन्नत के 1400 साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकठ्ठा किया हुआ सरमाया है। 1400 साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकठ्ठा करने का काम प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं। प्रोफेसर साहब ने खुद को अहले सुन्नत कहलाने वाले अहले हदीस और अहले देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी।

आज के इस पुरफितन दौर में मुहब्बते अहले बैत ؑ के अलम को बुलन्द करनेवाले खुसरो क़ासिम साहब की पैदाइश सन 1963 में उस खानदान में हुई जिस खानदान के कई नामी उलमा ने दीन के लिए अपनी ख़िदमत अंजाम दी है। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब 'सिद्दीकी' ख़ानदान से ता'ल्लुक रखते है। आपने अलीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी से ही B.Tech (Bachelor of Technology.) और M.Tech (Master of Technology) की पढाई की। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब को सय्यिदी शैख़ मुहम्मद बिन यह्या निनोवी (सादाते हुसैनी) से हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा ؑ से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँखों से देखी हैं। अल्लाह ﷻ ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोजे कयामत

उनको, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलुल्लाह ﷺ के हाथो जामे कौषर नसीब फरमाये ......... आमीन ।

प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब की तरतीबदा किताबो की सबसे बडी ख़ूबी येह है कि इसमे अहले बैत ؑ के फज़ाईल सिर्फ अहले सुन्नत वल जमाअत की किताबों से ही नक्ल किये गये है जो अहले सुन्नत की अवाम के लिए एक ऐसा तोहफा है जिसको अहले सुन्नत के मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन, मुफस्सिरीन कई सालों पहले तय्यार कर के गए है ।

ये उन लोगों के मुंह पर तमाचा है जो अकसर ये कहकर अवाम को गुमराह करते है कि अहले बैत ؑ की मुहब्बत को एक हद तक ही रखा जाये क्यूंकि फ़ज़ीलते अहले बैत ؑ तो शिया-राफ़ज़ी के किताबो में है ऐसे लोगों को प्रो. खुसरो क़ासिम साहब की किताबे जो कुतुबे अहले सुन्नत के हवालो से भरी पडी है, उनको पढकर खुद की इस्लाह करनी चाहिये ।

अज़ ख़ादीमे दरे ज़हराए पाक ؑ
डॉ. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी

# 2. सूरह अल-कौषर और खुलासाए तफ़सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

(तर्जुमा: बेशक हमने दी तुझको कौषर, सो नमाज़ पढ़ अपने रब के आगे और क़ुर्बानी कर। बे-शक जो दुशमन है तेरा वही रह गया पीछा कटा।)

## खुलासाए तफ़सीरः

बे-शक हमने आप को कौषर (जन्नत की एक हौज़ का नाम भी है और हर ख़ैर कसीर भी इसमें शामिल है) अता फ़र्माई है। (जिसमें दुनिया व आख़िरत की हर ख़ैर-व-भलाई शामिल है) दुनिया में दीने इस्लाम की बक़ा व तरक़्क़ी और आख़िरत में जन्नत के दरजाते आलिया सब दाख़िल हैं। सो (उन नेअमतों के शुक्र में) आप अपने परवरदिगार की नमाज़ पढ़िये (क्योंकि सबसे बड़ी नेअ़मत के शुक्र में सबसे बड़ी इबादत चाहिये और वह नमाज़ है) और (तकमीले शुक्र के लिए जिस्मानी इबादत के साथ माली इबादत यानी उसी नाम के नाम की) क़ुर्बान किजीये। (जैसा दुसरी आयतों में उमूमन नमाज़ के साथ ज़कात का हुक्म है उसमें ज़कात के बजाए क़ुर्बानी का ज़िक्र शायद इसलिए अख़्तियार किया गया कि क़ुर्बानी में माली इबादत होनेके इलावा मुश्रेकीन और मुश्रिकाना रुसूम की अमली मुख़ालिफ़त भी है क्योंकि मुश्रेकीन बुतों के नाम की क़ुर्बानी किया करते थे। आगे आँ-हज़रत ﷺ के साहबज़ादे क़ासिम की बचपन में वफ़ात पर बाज़ मुश्रेकीन ने जो यह ताना दिया था कि उनकी नस्ल न चलेगी और उनके दीन का सिलसिला जल्द ख़त्म हो जाएगा, इस का जवाब है कि आप ﷺ ब-फ़ज़्लेही तआला बे-नाम-व-निशान नहीं हैं बल्कि) बिल-यक़ीन

आप ﷺ का दुशमन ही बे-नाम-व-निशान है। (ख़्वान ज़ाहिरी नस्ल उस दुश्मन की चले या न चले लेकिन दुनिया में उसका ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी नहीं रहेगा। ब-ख़िलाफ़ आप ﷺ के कि आप ﷺ की उम्मत और आप ﷺ की याद नेक-नामी, मुहब्बत व इतिक़ाद के साथ बाक़ी रहेगी, और यह सब नेअ़मतें लफ़्ज़े कौषर के मफ़हूम में दाख़िल हैं। अगर पिसरी औलाद की नस्ल ना हो न सही, जो नस्ल से मक़्सूद है वह आप को हासिल है यहाँ तक कि दुनिया से गुज़र कर आख़िरत तक भी और दुश्मन उससे महरुम है।)

## मआरिफ़ व मसाइलः

**शान-ए-नुज़ूल :** इब्ने अबी हातिम رحمة الله ने सुद्दी رحمة الله से और बैहक़ी رحمة الله ने दलाइले नुबुव्वत में हज़रत मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन رضي الله عنه (इमाम मुह़म्मद बाक़र رضي الله عنه)से नक़ल किया है कि जिस शख़्स की औलादे ज़कूर मर जाए उसको अरब अब्तर कहा करते थे या'नी मक़्तू-उन-नस्ल। जिस वक़्त नबीए करीम ﷺ के साहबज़ादे क़ासिम या इब्राहीम رضي الله عنه का बचपन ही में इतिक़ाल हो गया तो कुफ़्फ़ारे मक्का आप ﷺ को अबतर कह कर ताना देने लगे ऐसा कहने वालों में आस बिन वाइल का नाम ख़ास तौर पर ज़िक्र किया जाता है उसके सामने जब रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्र किया जाता तो कहता था कि उनकी बात छोड़ो यह कुछ फिक्र करने की चीज़ नहीं क्योंकि वह अबत्तर (मक़्तू-उन-नस्ल) हैं जब उनका इंतिक़ाल हो जाएगा उनका कोई नाम लेने वाला भी न रहेगा. उसपर सूरा-ए-कौषर नाज़िल हुई। (रवाहुल-बग़ावी, इब्ने कसीर व मज़हरी)

ख़ुलासा यह है कि कुफ़्फ़ारे मक्का जो रसूलुल्लाह ﷺ के पिसरी औलाद न रहने सबब अबत्तर होने के ताने देते थे या दूसरी वजह से आप की शान में गुस्ताख़ी करते थे उनके जवाब में सूरहे कौषर नाज़िल हुई है

जिसमें उसे तानों का जवाब भी है कि सिर्फ औलादे नरीना के न रहने से आप ﷺ को मक़्तू-उन-नस्ल या मक़्तू-उज़्-ज़कर कहने वाले हक़ाइक़ से बे-ख़बर हैं। आप ﷺ की नस्ल नस्बी إن شاء الله दुनिया में ता-क़ियामत बाक़ी रहेगी. अगर्चे दुख़्तरी औलाद से हो।

(तफ़सीरे मआरिफ़ुल क़ुरआन मुफ़्ती शफ़ीअ साहब)

इस लिहाज़ से कौषर से मुराद जनाबे सय्यिदा काएनात फ़ातिमा ज़हरा رضي الله عنها हैं क्योंकि सरकारे दो-आलम ﷺ की ज़ुर्रियते ताहिरा आप رضي الله عنها के ही ज़रीया दुनिया में बाक़ी है। आपके رضي الله عنها औलादे ज़ाहिरीन में ऐसी ऐसी मुबारक हस्तियाँ हैं. जो हिदायत की दुनिया के आफ़्ताब व महताब हैं जिनमें सबसे पहले जवानाने जन्नत के सरदार सय्यिदना हसन رضي الله عنه व हुसैन رضي الله عنه हैं। उसके बाद बाक़ी आइमाए ताहिरीन अहले बैत जैसे इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन, इमाम बाक़र, इमाम जाफ़र सादिक़, इमाम काज़िम और इमाम रज़ा رضي الله عنهم, الحمد لله इस वक़्त भी पूरी दुनिया में कसरत से सादाते किराम मौजूद है और अगर कोई तारीख़े इस्लाम का ब-ग़ौर जाइज़ा ले तो दीन की ख़िदमत जितनी सादाते किराम के ज़रीआ हुई है इतनी औरों के ज़रिया नहीं हुई. आपकी رضي الله عنها औलाद में ही बड़े-बड़े औलियाए किराम जैसे सय्यिदना अब्दुल-क़ादिर जीलानी, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और सैय्यद मीर अ़ली हमदानी رحمة الله عليهم हुए हैं जिनके दस्ते अक़्दस पर लाखों लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया है और إن شاء الله क़यामत तक यह सिलसिला रहेगा यहाँ तक यह शर्फ़ भी सय्यिदा काएनात رضي الله عنها को हासिल है कि आपके एक फ़रजन्द "इमाम मेहदी عليه السلام" इमामत में सय्यिदना इसा عليه السلام नमाज़ अदा करेंगे. दर-हक़ीक़त **"कौषर"** **'सय्यिदा फ़ातिमा** رضي الله عنها**'** ही हैं।

## इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ का भी यही क़ौल है :

इमाम राज़ी رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं: "कौषर से नबी अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की औलाद मुराद है. मुफ़स्सिरीन कहते हैं : क्योंकि कि यह सूरत उन लोगों की तरदीद के लिए हुई है जो आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को अदमे औलाद का ताना दिया करते थे। आयत का मतलब यह है कि अल्लाह आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को ऐसी नस्ल अता करेगा जो हमेशा बाक़ी रहेगीं। चुनाँचे देखिए कितने अहले बैत क़त्ल कर दिए गए. उसके बावजूद दुनिया उनसे भरी हुई है और बनी उम्मैया का कोई आदमी नहीं बचा जो क़ाबिले ज़िक्र हो। मज़ीद बर-आँ यह भी देखिए कि उस नस्ल में इमाम बाक़र رضی اللہ عنہ इमाम सादिक़ رضی اللہ عنہ, इमाम काज़िम رضی اللہ عنہ, इमाम रज़ा और नफस्सुसज़किया رضی اللہ عنہ जैसे कितने अकाबिर पैदा हुए।"

(तफ्सीरे कबीर फ़ख़रुद्दीन राज़ी, तफ़सीरे सूरह कौषर)

## 3. फ़ज़ाइले सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا

1. "हज़रत अबू-सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ ने अल्लाह तआला के इस इर्शादे मुबारका... **ऐ अहले बैत ! अल्लाह عزوجل तो यही चाहता है कि तुम से (हर तरह की) आलूदगी दूर कर दे...** के बारे में कहा है कि यह आयत मुबारका पाँच हस्तियों हुज़ूर नबी-ए-करीम صلی اللہ علیہ وسلم, हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہم के बारे में नाज़िल हुई।" (तबरानी अल-मुअजमुल औसत रक़म 3456, तफ़सीरे तिबरी, जिल्द 22 सफ़हा 6)

2. "हज़रत अबू-हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया: **"आसमान के एक फ़रिश्ते ने मेरी ज़ियारत नहीं की थी। पस उसने अल्लाह तआला से मेरी ज़ियारत की इजाज़त ली और उसने मुझे ख़ुशख़बरी सुनाई. (या) मुझे ख़बर दी कि फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरी उम्मत की सब औरतों की सरदार हैं।"**
(तबरानी अल-मुअजमुल कबीर रक़म 1006,
बुख़ारी तारीख़े कबीर रक़म 728,
ज़हबी, सैरेआलामुन्नुबला, जिल्द 2, सफ़हा 127)

3. हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से फ़रमाया : **"क्या तुम्हें इस बात पर ख़ुशी नहीं कि तुम अहले जन्नत की तमाम औरतों की सरदार हो और तुम्हारे दोनों बेटे जन्नत के तमाम जवानों के।"**
(मजमाउल ज़वाइद जिल्द 9 सफ़हा 201, मुसनद-बज़्ज़ार, रक़म 887)

4. हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया: **मेरी बेटी का नाम फ़ातिमा رضی اللہ عنہا इसलिए रखा गया है**

कि अल्लाह तआलाने उसे और उस्से मुहब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से अलग-थलग कर दिया है।"

(फिरदौसुल अख़्बार, रक़्म 1385, कन्ज़ुल आमाल, रक़्म 34227)

5. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से मरवी है कि "हुज़ूर नबीए करीम ﷺ सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से फ़रमाते थे : **"(फ़ातिमा ﷺ !) मेरे माँ-बाप तुझ पर क़ुर्बान हों।"** (अल-मुस्तदरक इमाम हाकिम ﷺ)

6. मुहम्मद बिन अ़ली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसुलूल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: **"बे-शक! फ़ातिमा ﷺ मेरे जिगर का टुकड़ा है, पस जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया।"**

(फ़ज़ाइले सहाबा, अहमद बिन हंबल ﷺ, रक़्म 1326, मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा रक़्म 32469)

7. हज़रत बुरीदा ﷺ से रिवायत है कि "हुज़ूर **नबीए अकरम ﷺ को औरतोंमें सबसे ज़्यादा मुहब्बत हज़रत फ़ातिमा अल-ज़हरा ﷺ से थी और मर्दो में हज़रत अ़ली अल-मुर्तज़ा ﷺ सबसे ज़्यादा महबूब थे।"**

(तिरमिज़ी, रक़्म 3868, सुनन निसाई, रक़्म 8498)

8. **उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा ﷺ रिवायत करती हैं। मैं ने हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ की साहबज़ादी सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से बढ़ कर किसी को आदात व अतवार, सीरत व किरदार और नशिस्त व बरख़ास्त में आप ﷺ से मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा।**

(तिरमिज़ी रक़्म 3872, सुनन अबू-दाऊद रक़्म 5217)

9. हज़रत मसूर बिन मख़्रमा ﷺ से मरवी है कि हुज़ूर नबी-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"बे-शक फ़ातिमा ﷺ मेरी शाख़े समर बार है, जिस चीज़ से उसे ख़ुशी होती है इस चीज़ से मुझे भी ख़ुशी होती है और**

**जिस चीज़ से उसे तकलीफ़ पहुँची है इस चीज़ से मुझे पहुँचती है।”**

(मुसनद अहमद बिन हंबल, जिल्द 3, सफ़्हा 332,
मुस्तदरक लिल हाकिम, रक़्म 4734,
सैरेआलामुन्नुबला, जिल्द 2, सफ़्हा 132,
फतहुल-बारी, जिल्द 9, सफ़्हा 329)

10. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से फ़रमाया: **बे-शक अल्लाह तआला तेरी नाराज़गी पर नाराज़ और तेरी रज़ा पर राज़ी होता है।”**

(अल-मुस्तदरक इमाम हाकिम ﷺ, रक़्म 4730,
तबरानी मुअजमुल-कबीर रक़्म 182,
असदुल-ग़ाबा, जिल्द 7 219)

11. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से है कि “हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ﷺ से फ़रमाया : **“जो तुमसे लड़ेगा मैं इससे लड़ुँगा और जो तुम से सुलहा करेगा मैं उससे सुलह करुँगा।”**

(सहीह इब्ने हिब्बान रक़्म 6977,
तबरानी मुअजमुल औसत, 2854,
असदुल-ग़ाबा, जिल्द 7 सफ़्हा 220)

12. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : **जिस ने हम अहले बैत से बुग़्ज़ रखा तो वो मुनफ़िक़ है।”**

(फ़ज़ाइले सहाबा अहमद बिन हंबल ﷺ रक़्म 1126,
अल-रियाज़ुल-नज़रा मुहिब्बे तिबरी, जिल्द 1, सफ़्हा 362,
तफ़्सीरुल-दुर्रे मन्सूर, जिल्द 7, सफ़्हा 349)

13. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से मर्फ़ूअन हदीस मरवी है की हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फ़र्माया: **“मैं दरख़्त हूँ, फ़ातिमा ﷺ उसकी**

**टहनी है, अ़ली ﷺ उसका शगूफ़ा और हसन-व-हुसैन ﷺ उसका फल हैं और अहले बैत से मुहब्बत करने वाले उसके पत्ते हैं, यह सब जन्नत में होंगे. यह हक़ है हक़ है।"**

(फ़िरदौसुल-अख़्बार रक़्म 135, सख़ावी इस्तिजलाब सफ़्हा 99)

14. हुज़ूर नबीए-अकरम ﷺ ने फ़रमाया: **"ऐ अनस! क्या तुम जानते हो कि जिबरईल ﷺ मेरे पास साहब-ए-अर्श का क्या पैग़ाम लाए हैं ?" फिर फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ातिमा ﷺ का निकाह अ़ली ﷺ से कर दूँ।"**

(ज़ख़ाइरुल-उक़बा, सफ़्हा 71.
ब-हवाला, तारीख़े बग़दाद व तारीख़ इब्ने असाकिर)

15. हज़रत उमर ﷺ फरमाते है कि मैं ने हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ को यह फर्माते हुए सुना: **"हर औरत की औलाद का नसब अपने बाप की तरफ से होता है सिवा-ए-औलाद फ़ातिमा ﷺ के, कि मैं ही उनका नसब हूँ और मैं ही उनका बाप हूँ।"**

(फ़ज़ाइले सहाबा अहमद बिन हंबल, रक़्म 1070,
तबरानी मोअजम अल-कबीर रक़्म 2631)

16. हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से मरवी है कि रसुलूल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा ﷺ से फ़रमाया: **"मेरे घर वालों में सबसे पहले तुम मुझ से मिलोगी।"**

(फज़ाइले सहाबा, अहमद बिन हंबल रक़्म 1345,
हिलयतुल-अवलिया, जिल्द 2, सफ़्हा 40)

17. हज़रत अ़ली ﷺ बयान करते हैं कि में ने हुज़ूर नबी अकरम ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना: **"क़यामत के दिन एक निदा देनेवाला पर्दे के पीछे से आवाज़ देगा: ऐ अहले महशर! अपनी निगाहें झुका लो**

**ताकि फ़ातिमा बिंते मुस्तफ़ा ﷺ गुज़र जाएं।"**

(मुस्तदरक लिल हाकिम रक़म 4728,
असदुल ग़ाबा, जिल्द 7 सफ़्हा 220)

18. हज़रत अ़ली رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: **"क़यामत के दिन मुझे बुराक़ पर और फ़ातिमा رضي الله عنها को मेरी सवारी अज्बा पर बिठाया जाएगा।"**

(तारीख़ इब्ने असाकिर जिल्द 10, 353,
मुस्तदरक इमाम हाकिम रक़म 4727)

19. हज़रत अ़ली رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुजूर नबी-ए-अकरम ﷺ ने सय्यिदा फ़ातिमा رضي الله عنها से फ़रमाया: **"(ऐ फ़ातिमा رضي الله عنها!) में, तुम और यह दोनों (हसन व हुसैन رضي الله عنهما) और यह सोनेवाला (हज़रत अ़ली رضي الله عنه), क्योंकि उस वक़्त आप सो कर उठे ही थे) रोज़े क़यामत एक ही जगह होंगे।**

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 1, सफ़्हा 101,
मुस्नद बज़्ज़ार, रक़म 1183,
मजमाउल ज़वाइद, जिल्द 9, सफ़्हा 169)

20. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि **"मैं ने फ़ातिमा رضي الله عنها से अफ़ज़ल उनके बाबा ﷺ के अलावा किसी शख़्स को नहीं पाया।"**

(तबरानी अल मुअजमुल-औसत रक़म 2721,
मजमाउल ज़वाइद जिल्द 9, सफ़्हा 201)

# 4. अल्क़ाबे सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا

शेख़ ज़बीह महल्लाती ने किताब ख़साइसे फ़ातमिया से हज़रत फातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا के एक सौ पैंतीस (135) लक़ब मुंज़बित किए हैं. जिनमें से कुछ यहाँ बयान किए जाते हैं।

| अरबी | अर्थ |
|---|---|
| آیةالله | अल्लाह की निशानी |
| احدی الکبر | एक बड़ी शख़्सियत |
| اروماۃالعناصر | तमाम अनासिर की असल |
| بقیةالنبوۃ | नुबुव्वत की शान |
| بهجةالفواد | दिलों की बहार |
| برزخ النبوۃ والولایة | नुबुव्वत व विलायत का पुल |
| ثمرۃالنبوۃ | नुबुव्वत का फल |
| جمال الآباء | आबा-व-अजदाद का जमाल |
| حبیبةالمصطفیٰ | मुस्तफ़ा की चहेती |
| حظیرۃالقدس | बहुत मुक़द्दस |
| خامسةاهل العباء | अहले अबा की पाँचवीं शख़्सियत |
| درۃالتوحید | तौहीद का मोती |
| الدرۃالشامخة | बड़ा मोती |
| ربیبةالمکرمة | ख़ातूने मकर्रम की परवुर्दा |
| زجاجةالوحی | आईनाए-वही |
| سفینةالنجاۃ | कश्तीए-निजात |
| شرف الأبناء | बेटों के लिए बाइसे शर्फ़ |
| الشمس المضیئة | आफ़्ताब ताबनाक |
| صاحبةالمصحف | मसहहफ़ बरदार |
| الصادقةفی السروالعلن | ख़ुफ़िया और अलल एलान हर दो हालत में सच बोलनेवाली |

| ابنة الصفور | ख़ाली हाथ लोगों का मरजा |
|---|---|
| اعز البرية | मख़लूक़ में सबसे मुअज़्ज़ |
| بضعة الرسول ﷺ | रसूलुल्लाह ﷺ की गोशाए जिगर |
| بيضاء | रौशन |
| باكية العين | तम आँखों वाली |
| تفاحة الفردوس | जन्नती सेब |
| ثالثة الشمس والقمر | सूरज व चाँद का तीसरा जुज़ |
| الجميلة الجليلة | जलालत व ख़ूबसूरती वाली |
| حاملة البلوى | आज़्माइशों को बर्दाश्त करने वाली |
| حجة الله الكبرى | अल्लाह की अज़ीम हुज्जत |
| الخيرة من الخير | बहतरीन लोगों में चुनिंदा |
| دعوة مستجابة | दुआए मुस्ताजाब |
| الدرة المنضدة | मुरत्तब या मज़बूत मोती |
| ريحانة النبي | नबी का फूल |
| الرشيدة | नेक |
| زين الفواطم | तमाम फ़वातिम की ज़ीनत |
| سلالة الفخر | जौहरे फख़्र |
| الشهيدة | गवाही देने वाली |
| صفوة الشرف | शर्फ़ ख़ालिस |
| الصابرة | सब्र करने वाली |
| صدف الفخار | फख़्र करने वालों की इन्तिहा |
| العارفة بالاشياء | चीज़ों की परख रखने वाली |
| عقيلة الرسالة | रिसालत का इदराक रखने वाली |
| العابدة التقية | इबादत करने वाली, मुत्तक़िय्यह |
| عين الحجة | अस्ल दलील |
| العفيفة | इफ़्फ़त व पाक-दामनी वाली |
| الفاضلة | फ़ाज़िला |

| | |
|---|---|
| القانتة | इताअत करने वाली |
| القائمةفی اللیل | रात में तहज्जुद पढ़ने वाली |
| کلمةالتقوی | कलमाए तक़्वा |
| معدن الحکمة | मर्कज़े हिकमत |
| المضطهدة | ग़ालिब होने वाली |
| المیمونة | मुबारक |
| محترمةالقلب | दिल के लिए बाइसे एहतिराम |
| النبیلة | शरीफ़ |
| ودیعةالرسول | रसूलुल्लाह ﷺ की अमानत |
| دعاءالمعروة | दुआए मारिफ़त |
| ینابیع الحکمة | सरचश्माए हिक्मत |
| الصائمةفی البهار | ब-कसरत रोज़े रखने वाली |
| عدیلةمریم الکبری | मरियमे कुबरा की हम-सर |
| العالمة | आलिमा, जानने वाली |
| عین الحیٰوة | चश्माए हयात |
| عروةالوثقی | मज़बूत ज़नजीर |
| فخر الائمة | फख़्रे अइम्मा |
| القانعة | क़नाअत करने वाली |
| قرار القلب | दिल का सुकून |
| کلمةاللّٰہ القامة | अल्लाह का बुलंद कलिमा |
| الکلمةالطیبة | पाकीज़ा कलिमा |
| المتهجدة | तहज्जुद पढ़ने वाली |
| الممتحنة | इम्तिहान लेने वाली |
| المظلومة | मज़लूमा |
| المعصومة | मासूमा |
| النعمةالجلیلة | अज़ीम नेअमत |

| | |
|---|---|
| نورالانوار | नूरे अनवार |
| الوحيدةالفريدة | मुन्फ़रिद व यकता |
| ينبوع العلم | सरचश्माए इल्म |

# 5. अस्माए सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا

اللهم صلى على محمد وعلىٰ آل محمد وبارك وسلم.

(ऐ अल्लाह दुरूद भेज मुहम्मद ﷺ पर और बरकतें व सलामती नाज़िल फ़रमा. )

किताब ख़ाना दानिशगाह पंजाब में एक क़लमी नुस्ख़ा “अस्मा-ए-हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا” बहुत ख़ूबसूरत और दीदहज़ेब है, उसकी जिल्द मज़हब, सरलूई तलाई, और हाशिया निस्फ़ इंच चौड़ा मुनक़्क़श और सुनहरी है। हर एक सफ़हा दो हिस्से पर मुश्तमिल है और हर हिस्सा में हज़रत फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا के अस्माए गिरामी में से दो-दो करके लिखे हैं।

| अरबी | अर्थ |
|---|---|
| فاطمة زهرا | फ़ातिमा ज़हरा |
| مستورة دانية | पाक दामन आसूदा ज़िंदगी वाली |
| محررة ولية | ख़ुदा की इबादत के लिए वक़्फ़ वलिया |
| محروسة مصلية | तवील मुद्दत तक नमाज़ पढ़ने वाली |
| جليلة عالية | आली मुक़ाम अज़ीमुल-मर्तबत |
| سالمة سليمة | सहीह सालिम |
| حليمة حسيبة | भरोसे वाली बुर्दबार |
| خبيبة مشفقة | महरूम मुश्फ़ीक़ |
| طاهرة مطهرة | पाक पाक करने वाली |
| مبرورة مرحومة | मुबारक मादिने रहमत |
| طيبة مطيبة | पाकीज़ह पाकीज़ा बनाने वाली |
| طيبة صالحة | मुबारक नेक |
| متحمدة مفخرة | तारीफ़ के लाइक़ फख़्र करने वाली |
| ممجدة سريمة | नेक बड़ा बनाने वाली |
| فاضلة رحمة | फाज़िल रहमत |
| شريفة عليه | शरीफ़ आली |
| باسطة محرمة | कुशादा दस्त (जूदो सख़ा वाली) मुहतरम |
| داعيه شافعة | दाई शफ़ाअत करने वाली |

| | |
|---|---|
| واضحة جاهدة | रौशन मेहनत करने वाली |
| وجيهة شهودة | बा-रोब गवाही देने वाली |
| مدينة عربية | मदनी अरबी |
| تهامية عاصمة | तहामी मर्कज़े असली |
| مخبرة واقعة | वाक़ई बा-ख़बर रहने वाली |
| الزهراء إم‌السبطين | दोनों नवासों की माँ ज़हरा |
| بتول | बतूल |
| زاهداة عابده | ज़ोह्द इख़्तियार करने वाली आबिदा |
| ركيعة معصومة | मासूम रुकू करने वाली |
| صائبة صابرة | दीन-दार साबिरह |
| صفبة رفيعة | पाकीज़ह बुलंद मरतबा |
| حليمة حكيمة | बुर्दबार हिकमत वाली |
| نسيبة جميلة | नस्ब वाली ख़ूबसूरत |
| ظاهر ةباطنة | ज़ाहिर बातिन |
| مغفورة | मग़फ़ूरह |
| هادية مهدية | हिदायत याफ़्ता हिदायत देने वाली |
| محمدة محمودة | तारीफ़ की जाने वाली तारीफ़ की हुई |
| مصلحة مسبحة | इस्लाह करने वाली तस्बीह बयान करनेवाली |
| مهلكة مكرمة | ला-इलाह कहने वाली करम बाँटने वाली |
| مكبرة قازية | तकबीर कहने वाली ऐब से दूर रहने वाली |
| وصلة وصيلة | सिलाह रहमी करने वाली |
| عليمة فاتحة | जानने वाली इब्तिदा करने वाली |
| معلمة رعية | मुअल्लिम ज़िम्मादार |
| شفيعة مشفعة | शफ़ाअत करने वाली |
| منعمة قرشة | इनआम करने वाली क़ुरैशी |
| صاحبة حاضرة | दोस्त हाज़िर रहने वाली |
| نورصفاله بضعة | हुज़ूर ﷺ की नूरानी हम बफ़्त<br>उनकी रौशन लख़्ते जिगर |

| | |
|---|---|
| حبیب الرحمن | रहमान की महबूब |
| فخر السوزان الاحزان | ग़मज़दों के लिए फख़्र |
| صلی اللہ علیٰ ابیھا و بعلھا و بارک وسلم | अल्लाह ﷻ उन के वालिद व औलाद पर दुरूद भेजे और बरकतें व सलामती नाज़िल फ़रमाए. |

# 6. मन्ज़ूम अल्क़ाब ख़ातूने जन्नत رضی اللہ عنہا

| | |
|---|---|
| نظمت منها نبذة يسيرة<br>कुछ नक़्ल कर रहा हूँ मुनज़्ज़म ब-इख़्तिसार | القاب بنت المصطفىٰ كثيرة<br>अल्क़ाब बिंते मुस्तफ़ा हैं बेहद व बे-शुमार |
| وبعلها الولي مع بنيها<br>शौहर पे और पिसर पर भी क़ुर्बां मैं बे-गुमाँ | نفسي فداها وفدا ابيها<br>ख़ुद उनपे और उनके पिदर पर फ़िदा यह जाँ |
| النورية حانية عذراء<br>कहते हैं उनको हानिया उज़रा व नुरिया | سيدة انسية حوراء<br>हूरों के दरमियान हैं इंसिया सय्यिदा |
| عفيفة قانعة رشيدة<br>औसाफ क़ानिआ व अफ़ीफ़ा रशीदा हैं | كريمة رحيمة شهيدة<br>बीबी करीमा और रहीमा शहीदा हैं |
| صابرة، سليمة مكرمة<br>और साबिरह सलीमा मुकर्रम सदा की हैं | شريفة حبيبة محترمة<br>हैं मुहतरम शरीफ़ा हबीबा ख़ुदा की हैं |
| جميلة جليلة معظمة<br>यानी मुअज़्ज़ेमा हैं वह मंसूरह बा-अदब | ميمونة منصورة محتشمة<br>मैमूना हैं जलीला जमीला भी है लक़ब |
| حليفة العبادة والتقوى<br>तक़वा शीम इबादतों में रोज़-व-शब कटे | حاملة البلوى بغير شكوى<br>सह कर मुसीबतें भी गिले को न लब खुले |
| ركن الهدى وآية النبوة<br>रुक्ने हदी, नबी के अलावा दो-चंद हैं | حبيبة البلوى وبنت الصفوه<br>सफ़वत की लडली है मसाइब पसंद हैं |
| تفاحة الجنة والمطهرة<br>पाकीज़ा और सेबे जिनान की तरह नक़ी | شفيعة العصاة ام الخيرة<br>बुनियाद नेकियों की गुनाहगारों की शफी |
| صفوة ربها وموطن الهدى<br>अपने ख़ुदा की मुंतख़ब और मर्कज़े हुदा | سيدة النساء بنت الرسول ﷺ<br>सरदार औरतों की हैं वह बिंते मुस्तफ़ा ﷺ |
| مهجة قلبه كذا البقية<br>धड़कन नबी के दिल की बक़ीयाह भी हैं बतूल | قرة عين المصطفى ﷺ وبضعته<br>ख़ुनकी चश्मे मुस्तफ़ा ﷺ हैं ब-ज़ित्ततुल-रसूल |
| محزونة مكروبة عليلة<br>हैं मुब्तला कर्बो-हज़ीना अलीला भी | حكيمة فهيمة عقيلة<br>कहिए हकीमा और फ़हीमा अक़ीला भी |
| باكية صابرة صوامة<br>बाकीया सबिरा भी और साइमुल-दवाम | عابدة زاهدة قوامة<br>वह आबिदा हैं ज़ाहिदा बा-कसरत क़याम |

| | |
|---|---|
| عطوفة رؤوفة حنانة<br>हनाना और अतूफ़ा रूफ़ा है उनका नाम | البرة الشفيقة الدنانة<br>गर याँ हैं नेको कार शफीक़ा ब-हदे तमाम |
| بدر تمام غرة غراء<br>बदर तमाम गुर्राह गुर्रा लक़ब भी हैं | روح ابيه درة بيضاء<br>रूह पिदर हैं और दुर्रे बैज़ाअ ब-लब भी हैं |
| واسطة قلادة الوجود<br>बिल-वास्ता वजूद जा जौहर उन्हें कहो | درة بحر الشرف والجود<br>जो दो-दो शरफ़ के बहर का गौहर उन्हें कहो |
| ولية الله وسر الله<br>अल्लाह की वलीय्या हैं राज़े-ख़ुदा भी हैं | امينة الوحي وعين الله<br>हमराज़े वही व हमसुख़ने मुर्तज़ा भी हैं |
| مكينة في عالم السماء<br>वह आलमे समा की मकीना हैं इक तरफ़ | جمال الآباء شرف الابناء<br>आबाई है जमाल तो अबना का शरफ़ |
| درة بحر العلم والكمال<br>बीबी दर अस्ल गहरे आलम-व-कमाल हैं | جوهرة الزوالجلال<br>हक़ यह है आप जौहरे अज़्ज़-व-जलाल हैं |
| قطب رحى المفا خر السنية<br>दार-व-मदारे शोरत आफाक़ ज़ात हैं | مجموعة المآثر العلية<br>मजमूआ-ए-ख़ज़ाना-ए-आली सिफ़ात हैं |
| مشكواة نور الله والزجاجة<br>मिश्कात नूरे हक़ हैं उजालों के वास्ते | كعبة الآمال لاهل الحاجة<br>हैं काबा-ए-उम्मीद गदाओं के वास्ते |
| ليلة قدر ليلة مباركة<br>बरकत की रात और हैं शबे क़द्र का वजूद | ابنة من صلت به الملائكة<br>बेटी हैं उसकी जिस पर मलाइक पढ़ें दुरुद |
| قرار قلب امها المعظمة<br>अपनी अज़ीम माँ के वह दिल का क़रार हैं | عالية المحل سر العظمة<br>आली महल हैं सर-ए-अज़ीम अल-वक़ार हैं |

इसका मन्जूम तर्जुमा मौलाना जमीरुल-हसन साहब, बनारस ने किया हैं।

## 7. الزهراء فاطمة فی کلمات المحققین

## सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا के सिलसिला में मुहक़्क़िक़ीन के अक़्वाल

١- الحافظ أبو نعيم الأ اصفهانی، ومن ناسكات الأ صفياء وصفيات الأ تقياء فاطمة رضى الله تعالىٰ عنها، السيد" البتول، البضعة الشبيهة بالرسول، ألوط أولاده بقلبه لصوقاً، وأولهم بعد وفاته لحوقا، كانت عن الدينا ومتعتها عازفة ، وبغوامض عيوب الدنيا وا فاتها عارفة (كتاب حلية الأ ولياء)

**तरजुमा :** हाफ़िज़ अबू नुएम अस्फ़हानी رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं कि सय्यिदा फ़ातिमा बतूल رضی اللہ عنہا बड़ी मुंतख़ब ज़ाहेदीन व इबादत गुज़ारों में से हैं, रसूल ﷺ से मुशाबह उनकी गोशा-ए-जिगर हैं। आप ﷺ की औलाद में आप से सबसे ज़्यादा आपके दिल के क़रीब रहने वाली हैं और आप ﷺ की वफ़ात के बाद सबसे पहले आप ﷺ से जा मिलने वाली हैं। दुनिया और उसके ऐशो आराम से बे-न्याज़ और उसके आफ़ात के ग़म्मूज़ को जानने वाली है।
(किताब हिलयतुल अवलिया)

٢- الاستاذ توفيق أبو علم، كانت رضى الله عنها، كريمة الخليفة،شريفة الملكة،نبيلة النفس، جليلة الحس، سريعة الفهم، مرهفة، الذهن،جزلة المروءة، غراء المكارم، فياحة نفاحة، جريئة الصدر، رابطة الجأش، حمية الأنف، نائية عن مذاهب العجب،

وكانت فى الذروة العالية، من العفاف والتصادق، طاهرة الذيل، عفيفة المئزر، عفيفة الطرف، انها سليلة شرف لامنازع لها فيه من واحدة من بنات حواء فمن تراه، واكتفائها بشرفها كأنها فى عزلة بين أبناء آدم وحوا۔ (كتاب أهل البيت)

**तरजुमा:** उस्ताज़ तौफ़ीक़ अबू इल्म कहते हैं कि "हज़रत फ़ातिमा ﵂ शरीफ़ जानशीन, करामत व शराफ़त की मालिके करीमुन्नफ़्स, बहुत ज़्यादा महसूस करने वाली, बहुत तेज़ समझने वाली, मुर्तबिते इफ़्कार और ग़ैरत रखने वाली थीं, और कब्र के तमाम तौर तरीक़ों से बिल्कुल दूर थीं, सिद्क़ व इफ़्फ़त, तहारत व पाकीज़गी के बुलन्द व बाला मुक़ाम पर फ़ाइज़ हैं, आप एक ऐसे शर्फ़ की बुनियाद हैं जिसमें कोई भी बिंते हव्वा आपसे मुनाज़िअत करने वाली यानी हम-सरी का दावा करने वाली नहीं, आपके शर्फ़ के लिए काफ़ी है कि आप आदम ﵇ व हव्वा ﵂ के दर्मियान बिल्कुल जुदागाना शख़्सियत की मालिक हैं।" (किताबे अहले बैत)

٣- العلامة ابن شهر آشوب، وقلنا الصديقة بالأقوال، والمباركة بالأحوال، والطاهرة بالأفعال، الزكية بالعدالة، والرضية بالمقالة، والمرضية بالدلالة، المحدثة بالشفقة، والحرة بالنفقة، والسيدة بالصدقة، الحصان بالمكان، والبتول فى الزمان، والزهراء بالاحسان، مريم الكبرى فى الستر، وفاطم بالسر، وفاطمة بالبر، النورية بالشهادة، والسماوية بالعبادة، والحانية بالزهادة، والعذراء بالولادة، الزاهدة الصفية، العابدة الرضية، الراضية المرضية، المتهجدة الشريفة، القانتة العفيفة، سيدة النسوان، وحبيبة حبيب الرحمن، المحتجبة عن خزان الجنان، وصفية الرحمن، ابنة خير

الـمـرسلين، و قرة عين سيد الخلائق أ جمعين، ووسطة العقد بين سيـدات نسـاء الـعالمين، والمتظلمه بين يدى العرش يوم الدين، ثـمـرـة الـنبـوـة، وأ م الأ ئـمة و زهـرـة فـواد شفيع الأ مة، الزهراء الـمـحـتـرمة، والـغـراء المحتشمة، المكرمة تحت القبة الخضراء، والا نـفية الـحـوراء، والبتـول الـعـذراء، ست النساء وارثة سيد الأ نبيـاء، وقـريـنة سيـدالأ وصيـاء ، فـاطـمة الـزهـراء ، الصديقة الـكبـرىٰ،راحة روح الـمـصـطـفـى، حـامـلة البلوى من غير فزع ولاشـكـوى، صـاحـبة شـجرة طوبى، ومن أ نزل فى شأنها وشان زوجـهـا وأ ولادهـا سـورـة هل أتى ، ابنة النبى، وصاحبة الوصى، وأم السبـطـيـن ، وجـدـة الأ ئـمة، وسيـدـة الـمـفـقـود ، الكريمة الـمـظلومة الشهيدة، السيدة الرشيدة، شقيقة مريم، ابنة محمد الأ كـرم، المفطومة من كل شر، المعلومة بكل خير، المنعونة فى الأ نـجـيـل ، الموصوفة بالبر و تبجيل، درة صاحب الوحى و التنزيل، جدها الخليل، ومادحها الجليل، وخاطبها المرتضى بأمر المولى جبرائيل۔ ( كتاب المناقب)

**तरजुमा : अल्लामा इब्ने शहरे आशोब** कहते हैं कि “हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا अक़्वाल के एतिबार से सिद्दीक़ा, अहवाल के एतिबार से मुबारक और अफ़आल के एतिबार से पाकीज़ा, अदालत की हैसियत से बे-दाग़, क़ौल के एतिबार से राज़ी, और दलालत उस पर कि उनसे भी राज़ी हो उनका ख़ुदा, शफ़क़त के एतिबार से मुनफ़रिद, नफ़्क़ा के एतिबार से शरीफ़, सदक़ा करने में सय्यिदा, मकान के एतिबार से महफ़ूज़, ज़माने भर की बतूल, एहसान के सबब ज़हरा पर्दे में मरियम कुबरा, और राज़ों को रोकने वाली, और नेकी

में फ़ातिमा, नूर यह साबित गवाही से इबादत करने में बिल्कुल आसमानी, ज़ोहद का शौक़ रखने वाली, वालादत के एतिबार से उज़रा ख़ालिश ज़ाहिदाह, अफ़ीफ़ा व इताअत गुज़ार, शरीफ़ व तहज्जुद गुज़ार, औरतों की सरदार अल्लाह ﷻ के चहेते की चहेती, जन्नत के ख़ज़ानों को छुपने वाली, अल्लाह ﷻ की मुंतख़ब बंदी ख़ैरे रुसुल की बेटी, सय्यिदुख़लाइक़ की आँख की ठंडक, सारी औरतों की सरदार औरतों की एक कड़ी, **यौमे जज़ा में अर्श के सामने फ़रियाद करने वाली नुबुव्वत का फल अइम्मा की माँ, उम्मत की शफ़ाअत करने वाले दिल की कली, ज़हरा मोहतरमा,** बड़ी इज़्ज़त व ग़ैरत वाली, सफ़ेद पोश, अज़रा व बतूल, औरतों में छट्टी, सैय्यदुल अंबिया की वारिस, सैय्यिदुलऔसिया का क़रीना, फ़ातिमा अल-ज़हरा, सिद्दीक़ा, कुबरा, रुहे मुस्तफ़ा का सुकून, आज़्माइशों को झेलने वाली, बग़ैर किसी शिकायत व घबराहट के तकलीफ़ बर्दाश्त करने वाली, तूबा के दरख़्त की हामिल और **वह जिन की और जिनके शौहर और जिनकी औलाद के लिए सूराह हल-अता नाज़िल की गई. नबी ﷺ की बेटी, वसी की ज़ौजा, सिब्तैन की माँ, इमामों की दादी,** मफ़क़ूद सय्यिदा, करीम मज़लूम व शहीद नेक सय्यिदा, आख़िरत और दुनिया की औरतों की सरदार, अ़ली मुर्तज़ाकी अहलिया, मुंतख़ब शख़्स की माँ और मुस्तफ़ा की साहबज़ादी, **मरियम ؑ की हम-पल्ला, सबसे मुकर्रम हज़रत मुहम्मद ﷺ की बेटी,** हर शर से महफ़ूज़, हर ख़ैर का इल्म रखने वाली, **जिसकी तारीफ़ इंजील में की गई,** जिसको नेकी और जलालत व बरकत से मुत्तसिफ़ किया गया, **साहिबे वही व क़ुरआन की मोती, जिसके दादा ख़लील,** और **जिसकी मदह करने वाला जलील,** और **जिनका पैग़ाम दिया मुर्तज़ा ने मौला के हुक्म से जिबरील ؑ के ज़रीया।"** (किताबुल-मनाक़िब)

# هى الزهراء رضی اللہ عنہا .8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اللهم صلى الله سيدنا محمد الفاتح لما اغلق والخاتم لما سبق ناصر الحق بالحق والهادى الى صراطك المستقيم و على اله حق قدره و مقدار العظيم۔

هى الزهرة الباهرة الطاهر ة السيدة البديعة المليحة قلب القلب المحمدى و سر السعادة السرمدى بضعة الرؤوف الرحيم، و كنز الحاء والميم فى الحواميم، وشعبة منه منحة الصراط المستقيم حبيبة أ بيها وأمه و قرة عينه بتول الله المتجلية على الخلق رجلا و كيف لا ؟؟ وهى الشريفة من كل نسب وسبب وقرابة فهى بنت من ؟؟ أم من؟؟ زوج من ؟؟؟!

حازت كل الفخار والمجد الكريم العظيم الشريف المقدس، زهرة القلب، وحلة لأ بناء الطاهرين، منجم الرجال، وفلك الجمال و اكمال أرض الميلاد الطيب،أ صل أصول الشجر المبارك، والزيتونه المحمدية، والنجم الملازم للبدر الأ تم، السائرة الناضرة الناظرة البادرة العاطرة، كمال البدور، والظل فى الارض البادئة بالمجد والنور، لو لوة التاج الزمردى وفص الحكمةالمحمدى، وكنز الفخارالأحمدى، شطر الكرم بتول الأ مم،عرش القلب المنير، وباب الرضا، وسر الغضب وحصن النجاة، و قرب المودة، وعز الأ صول و بنت الرسول،فرط المحبة، وطمس الولاية وشرف ترف العارفين بالطواسين، وفم الدرر، فلك مدارأسرار المدينة، وأرض

رحب لب الحقيقة المكينة، وشمس نجاة فلاة الأ حرار، حنين أ نين الزرع لـلأ مطار، زاد المؤنة والمعؤنة المصونة للشفاعة وبدر فخر شكر الطاعة،أ صـل حـكـمة نـعـمة رحـمة الـلـه عـلى العباد، ومداد مد الزاد وسر البلاد الـمـفـتـوحة، آية غـاية بـداية كـفاية الأمان، وإشراقة عناية جناب صاحب الامتـنـان، مكتملة الأ ركان قائمة البنيان بأن المودة فى القربى، وسر الماء الـمطهر للكون بفخر ويطهركم تطهيراويسقون فيها، لأ نها فيها ومن فيها بـأ خـذالـزهر الروائح والعطور، وتقاسيم الصبايا والحور والبدر من جناب مهـاب الـطـلـعة الـفاطمية أ حسنت حنسا فأ نجبت حسنا ، قطب الزمان وفخر الأ مة وكاشف العمة، و قاتل الفتنة ومصلح الفئتين۔

وحسـت بحس أ بيها فأحتست حسوة شهيد الدين فكان الحسين، امام المجاهدين،وإيوان الدين و عمدة الصابرين۔

وزانـت وأزدانـت بـزى النبى فأنت بهازى نبى، صاحبة الشورى والـمشورة والطلعة البهية المحللة بالجلال والكمال والدلال، حنان الأم، ونور البدر الأ تم، أم أهل المعارف والعوارف۔

وكيف لاوالـفـاطـمية فـطمتهم على حب الرحمن و نور القرآن، وريـق الـنـبـى الـعـدنان،فكانت الأرض الطمية الزهراة بأ ز هار الربيع الزهر بأنوار الحبيب۔

شبـت على شبة فتشابهت فى الذات والصفات والآيات حتى اذا مشـت تـمشـى كـما يمشى، و تطوى لها الأ رض طيا، وتسقى من بحور النور ريا، ملكة مملكة الحسان و بدور الزمان، وسيدات الحسن والجمال الفتان بقديم نديم الشكر والايمان،سلطانة الزهد والطعاء، سير الباء والفاء ولـطـاء والهـاء ميـم الـمحاسن ، وحسن المحامد وحمد الآلاء اكسير الا

صـطفاء من حازت أعلى مراتب الاجتباء فعذريا جناب العالى الغالى، وأم الـغوالى، يا سنا الاشراق فى أفاق صباح امة المسلمين ، يابنت من أمنه ربه عـلـى هـذا الدين، يازوج ولى المئومنين، يا أم الحسنين الكوكبين النيرين، وأم الـزيـنبية البـرزخ بين الأخوين، أمان الدين ومودة رسول رب العالمين، فـمـن أكـون حتـى أ سـطـر حروفا فى مدحك يا زهراء الأ باء والأ بناء، و ترياق السماء لكل داء۔

غـلبـنـا الـحـنيـن الى نبينا، و قربى نبينا، واسم نبينا وظل نبينا علِم نبيـنا، وحلم نبينا ورحمة نبينا،وأ نتى يامن أنتى بنت نبينا، يا سيدة النساء يا زهـراء عـليك السـلام مـن الأرض الى السماء بعدد ذرات الرمال وقطرات الـمـاء، وزرع الـنـمـاء ونـور الـضيـا وصـلاة عليك يا أ با الزهراء، يا برزخ الشرف البديع الممكون بالكاف والنون يا قرة عين الأ يام والليالى وفيض عـرض مـدالأ وامـر الـعـوالـى، ياباب نجاح فلاح الدارين، ومظهر سعادة ميـلاد بـلاد الكرم والدين، يا دولة صولة جولة المجد والتمكين وسحاب مـطـر الـرحـمـة الـنـابتة لأ رض قلوب العارفين، وندى مدى فلك رأفة علام الـغيـوب ان شـاء الـلـه و بأ مر الله و بفضل الله تقول يا رب أ متى أمتى ، و يقول سبحانه يا حبيبى رحمتى، رحمتى وعلى آلك وصحبك وسلم۔

## तरजुमा

# यह हैं ज़हरा

ऐ अल्लाह ! दुरुद भेज सय्यिदना मुहम्मद पर जो कि अर्सा के बाद नुबुव्वत-व-वही के सिलसिले को शुरु करने वाले पहली तमाम नुबुव्वतों को ख़त्म करने वाले हैं, हक़ की हक़ के साथ मदद करने वाले हैं, आप के सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ हिदायत करने वाले हैं और उनकी आल पर उन्हीं की मिक़दारे अज़ीम के मुताबिक़ दुरुद भेज।

यह रौशन व ख़ुश्नुमा पाकीज़ा व ख़ूबसूरत व अनोखी सय्यिदा फ़ातिमा हैं यह क़ल्बे मुहम्मदी का दिल और सआदते सरमदी का राज़ हैं। यह रऊफ़ुर्रहीम की लख़्ते जिगर हैं। हाम मीम का ख़ज़ाना हैं। सिराते मुस्तक़ीम के अता होने का एक शोबा हैं, अपने वालीद की चहेती हैं, उनका लक़ब **"उम्मे अबीहा"** यानी अपने वालिद की अस्ल चीज़ हैं, उनकी आँख की ठंडक हैं, वह अल्लाह की बतूल हैं और वाज़ह तौर पर मख़्लूक़ में तमाम लोगों पर ज़ाहिर है और कैसे न हो वह अशरफ़ व मुकर्रम हैं निस्बत व सबबे क़राबत के इतिबार से वह बेटी किसकी हैं, और माँ किसकी हैं और बीवी किसकी हैं।

उनके अंदर तमाम मुजद व करम व बुज़ुर्गी व शराफ़त व करामत मुजतमा है, वह दिल की ख़ूबसूरती हैं वह पाक व मुकर्रम बेटों को जमा करने वाली हैं। लोगों को चमकाने वाली, जमाल व कमाल का आस्मान, पाकीज़ा विलादत की सर-ज़मीन, मुबारक दरख़्त की जड़ों की जड़, गोया वह मुहम्मद के लिए ज़ैतून का दरख़्त हैं। और वह सितारह हैं जो मुकम्मल चौदहवीं के चाँद को पकड़े रहता हैं। चलने वाली शगुफ़्ता हिफ़ाज़त करने वाली ख़ूशबूदार हैं, चौदहवीं के चाँद को मुकम्मल करने वाली हैं। बे-आब-व-गियाह ज़मीन में मुजद व नूर के सबब साया हैं। ज़मुर्रदी ताज

का लूलू मोती हैं और हिक्मते मुहम्मदी ﷺ को खोलने वाली हैं, और हुज़ूर ﷺ के तमाम फख़रों का ख़ज़ाना हैं, करम का हिस्सा हैं, तमाम उम्मतों की बतूल हैं, क़ल्बे मुनीर का अर्श हैं, रज़ा का दरवाज़ा हैं ग़ज़ब का राज़, नजात का क़िला मुहब्बत की क़ुर्बत, उसूल की इज़्ज़ात रसूल ﷺ की बेटी मुहब्बत में हद से गुज़रने वाली, विलायत को ढाँपने वाली, आरेफ़ीन के बराबर शर्फ़-व-इज़्ज़त में, और मोतियों की मोती, इसरारे मदीना के मदार का आसमाँ और वह ज़मीन कि जिसके अंदर बहुत से हक़ाइक़ पोशीदा हैं, शोरफ़ा की वादी के लिए नजात का सूरज, बारिश के लिए खेती का आह का शौक़, शफ़ाअत के लिए हिकमत व मुआविन व मददगार और तोशा, ताअत व शुक्र और फ़ख़्र का चाँद, बंदों पर अल्लाह ﷻ की रहमत व हिकमत व नेअ़मतकी अस्ल, ज़ाद को बढ़ाने का ज़रीया, बिलादे मफ़्तूहा का राज़, अमान की किफ़ायत व इब्तिदा और ग़ायत की निशानी, साहबे एहसान की इनायत को रौशन करने वाली अरकान को मुकम्मल करने वाली बुनियादों को क़ाइम करने वाली अक़रबा में मुहब्बत की अमानतदारी के ज़रिया व "यतह्हिरो कुम तत्हीरा" का फ़ख़्र बनने के लिए मा-ए-मुतह्हर का राज़, जिसमें उन सबको पिलाया जाए इसलिए के जो भी इसमें है वह ख़ूबसूरत व पाकीज़ा ख़ुशबु लेता है। हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها की हैबतनाक जनाब से मुहब्बत व रोशनी तक़सीम होती है। उन्होंने हुस्नमें मज़ीद हुस्न का इज़ाफ़ा किया तो हसन رضي الله عنه को जन्म दिया, जो कि ज़माने के क़ुतुब और फ़ख़्रे उम्मत हैं, बदली को छाटने वाले और फ़ित्ना से जंग करने वाले और दो गिरोहों के दरमियान मसालिहत करने वाले हैं।

उन्होंने अपने अब्बा मुहतरम के एहसास से महसूस किया तो उन्होंने दीन के लिए शहीद होने वाले यानी शहादत का घूँट पीने वाले को महसूस कर लिया और वह हुसैन رضي الله عنه थे जो मुजाहिदीन के इमाम और ज़ाहेदीन के लिए बद्रे मुनीर हैं। दीन का मरकज़ और सब्र करने वालों के सुतून हैं।

उन्होंने आरासता किया और नबी ﷺ की हैयत से मुज़य्यन हुईं तो वह नबी ﷺ की हैयत में आईं, शूरा व मशविरा वाली हैं. हैबत व जलाल व जमाल व कमाल व अज़मत वाली हैं. चौदहवीं के मुकम्मल चाँद का नूर, माँ का शौक़ हैं अहले मारिफ़ व अवारिफ़ की माँ हैं।

और क्यों न हो हिफ़ाज़त उनको महफ़ूज़ कर दिया अल्लाह ﷻ की मुहब्बत और नूरे क़ुरआनी और नबी ﷺ की रजा जुई में, तो वो नौख़ेज़ व शादाब ख़ुश्नुमा ज़मीन के मानिंद हैं जिनमें नबी ﷺ के अनवार के फूलों की फ़स्ले रबी नज़र आ रही हैं।

वह मुशाबेहा की जवानी के साथ जवान हुई तो वह ज़ात व सिफ़ात व आयात में मुशाबा हुईं, यहाँ तक कि वह वैसे ही चलती हैं जैसे आप ﷺ चलते थे और उनके लिए ज़मीन सिमट आती है। वह नूर की समुंदर से सैराब हो कर पीती हैं, वह नूर व ख़ूबसूरती की मम्लिकत की मलिका हैं, जमाल व बहार व हुस्न की मज़हर ख़्वातीन में नुमायाँ हैं। शुक्र व ईमान की बंदी, ज़ोह्द व अता की मलिका फतह का राज़, महासिन की “मीम” की, महामिद की, इंतिख़ाब की अक्सीर नेमतों की तारीफ़ और जिस ने इज्तिबाइयत व पसंदीदगी के तमाम आला मरातिब को अपने अंदर जमा कर लिया।

माज़िरत ! ऐ बलंद व बाला कारनामों वाली और उम्मते मुस्लिमको रौशन करने वाली ज़ू-फ़िशाँ, और ऐ उस शख़्सियत की बेटी जिसको अल्लाह तआला ने उस दीन का अमीन बनाया ऐ मुसलमानों के वली की ज़ौजा, ऐ हसनैन की वालिदा मोहतरमा, जो कि दोनों रौशन सितारे हैं, और ज़ैनब ؓ की वालिदा जो दो भाईयों को जोड़ने वाली हैं। दीन की अमान और रब्बुल आलमीन के रसूल ﷺ की मुहब्बत, और मैं हूँ कौन कि मैं आप ؓ कि मदह में चंद सतरें लिखूँ ऐ आबा व औलाद की ज़ीनत व जमाल और हर मर्ज़ के लिए आसमान का तिर्याक़।

हम पर अपने नबी ﷺ का शौक़ ग़ालिब आ गया और अपने नबी ﷺ की क़ुर्बत और अपने नबी ﷺ का नाम और अपने नबी ﷺ के साया व इल्म और हलम और अपने नबी ﷺ की रहमत का शौक़ ग़ालिब आ गया, और आप भी मेरे नबी ﷺ की साहबज़ादी हैं आप رضي الله عنها पर सलामती हो ज़मीन से आसमान तक रेत के ज़र्रों और पानी के क़तरों के ब-क़द्र, बढ़ने वाली खेतों और सूरज की रोशनी के ब-क़द्र और दुरूद हो आप ﷺ पर ऐ ज़हरा رضي الله عنها के वालिद मोहतरम ! ऐ काफ़ व नून के ख़ूबसूरत शरफ़ को जोड़ने वाले ! ऐ ज़माने की आँखों की ठंडक और अवामिर व बुलंद कारनामों के पेश आने का फ़ैज़ ! और फ़लाह व दारैन के ज़ामिन ! और ऐ शराफत व दीनदारी की सआदत को जन्म देने वाले ! और ऐ मजद तम्कीन की दौलत रखने वाले ! और आरेफ़ीन के दिलों पर रहमत की बारिश बरसाने वाले बादल ! अल्लाह عزوجل के पास अल्लाह عزوجل के हुक्म से उसके फज़्ले रहमत व शफाअत करनेवाले ! कि आप ﷺ कहेंगे ऐ रब ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत और अल्लाह عزوجل फ़रमाएगा, ऐ मेरे हबीब ! मेरी रहमत, मेरी रहमत, दुरुद व सलाम हो आप ﷺ पर आप ﷺ की आल पर और आप ﷺ के असहाब पर।

(डाक्टर अब्दह यमानी)

# 9. सय्यिदा की शाने अक़्दस में मन्ज़ूम नज़रानाए अक़ीदत

## أهل الكساء

| | |
|---|---|
| ان زهـا الـفـضل وزان الشرفـاء | انـمـا مـجـمـعـه أهل الكسـاء |
| مـن بـقـرآن عـظيـم ذكـرهـم | وحـديـث من بشير الأ منـاء |
| من كسـا الـطهـر عليهم قد غدا | جـلـل الـنـور سـمـاهـم والثناء |
| مـن اليهـم سـار دربـى وانتهى | جبهم خـالـط روحى والدمـاء |
| فـرسـول الـلـه بـالحسنى أتى | صاحب المعراج فى أعلى سماء |
| حبـه مـن حبهـم عيـن الـرضا | انهـم أهـل الـمـعـالـى والعلاء |
| هـم كبـار الـقوم من صفو التقى | فهـنيـئـا آل بيـت ذا اصطفـاء |
| بـخـطـاهـم نـقتـفى نبع الهدى | مـن رحيـق الـزاد عـون الخلصاء |

(नोट : अह्ले किसा से मुराद हुज़ूर ﷺ हज़रत फ़ातिमा, अ़ली, हसन और हज़रत हुसैन عليهم السلام हैं हुज़ूर ﷺ ने चादर के नीचे ले कर दुआ फ़रमाई थी।)

## अह्ले किसा

- शाइरा नदी-उर्-रफ़ाई

- अगर फज़्ल रौशन हुआ और शोरफ़ा मज़ीं हों इस फ़ज़्ल के सबब तो अह्ले किसा उन सब के मज्माए फ़ज़ाइल हैं।
- जिन का ज़िक्र क़ुरआने करीम में है और अमानत-दारों को बशारत देने वाले की हदीष में।

- जिसने उन पर पाकीज़गी की चादर डाली तो उनको नूरानी बुलंदी और तारीफ़ व तौसीफ़ अता की।
- वह जिन तक जा कर मेरा रास्ता ख़त्म हो जाता है कि उनकी मुहब्बत मेरे ख़ून और मेरी रूह में शामिल हो गई हैं।
- तो रसूलुल्लाह ﷺ नेकियों के साथ आए और साहिबे मेराजे आसमानी के सबसे बुलंद मुक़ाम पर आए।
- तो आप ﷺ की मुहब्बत भी उन हज़रात की मुहब्बत से मिली हुई है और उसी में अस्ल रज़ा है और यह लोग बड़े कारनामों और मरतबों वाले हैं।
- वह बहुत बड़े लोग और ख़ालिस मुत्तक़ी हैं तो बड़े मुबारक हैं यह मुंतख़ब अह्ले बैत।
- उनके नक़्शे क़दम में हमको चश्मे हिदायत मिलता है, मुख़्लिस मुहब्बत करने वालों को तआवुन और ज़ादे सफ़र की ख़ुश्बू मिलती हैं।

# سيدتنا الزهرا رضي الله عنها .10

مايقول وينظم الشعراء      كل المحاسن أنت يا زهراء

ما القول الا قربة من شاعر      لتعمه من فيضك الأضواء

فالبحر أنت وكل شاد غارف      أو تغرف البحر المحيط دلاء

أنت السماء تظلنا بجمالها      كم هام أجوائها الشعراء

يا درة فى خمسة أهل الكسا      أصل و فرع فيهم الحوراء

هم والدزوج و فرعا طهر كم      حسنان منكم منهما النجباء

ما أشرقت بالعلم شمس هداية      الا ومنكم نور ها الوضاء

مالاح للار شاد نجم ساطع      الا و فى فلك لكم مشاء

كلا ولا سلك الطريق مجاهد      الا وأنتم سنة غراء

يا بضعة المختار أنى ترتقى      لمقامك العالى الكريم نساء

أنى يساوى الجزء من خير الورى      بسواه أنى تستوى الأجزاء

طهرت قلبى بالتحدث عنكم      فأتاه من نور الحديث صفاء

و سعيت بين اكل أحمل دعوة      أنتم جمال أصولهاالبناء

و قد اتخذت جمالكم لى مذهبا      فبه يزول البؤس والضراء

وبه أنال رعاية و هداية      و يعم جسمى والفواد شفاء

رباه انى طامع فى وصلهم      دنيا وأخرى والقبول رجاء

ويمدنى الرحمن منه بفضله      فهو الكريم وشانه الاعطاء

مولاى صلى الله النبى وآله      وهب السلام يعمه الاثراء

## सय्यिदा ज़हरा

- शोअरा क्या कहेंगे और क्या नज़्म करेंगे कि आपके अंदर तो तमाम महासिन व ख़ूबी जमा हैं ऐ ज़हरा।
- जो भी बात है वोह शाइर की क़रबत की अक्कासी है ताकि आपके फ़ैज़ की रौशन किरणें उस तक भी पहुँच जाएं।
- तो आप समुंदर हैं और हर तारीफ़ करने वाला चुल्लु लेने वाला है तो क्या तुम बहरे मुहित से चुल्लु भर पानी ले रहे हो।
- आप वह आसमान हैं जो अपने जमाल से साया देता है और कितने ही शोअरा उसकी वसअतों में गुम रहते हैं।
- ऐ पाँचा अह्ले किसा के दरमियान क़ीमती मोती अस्ल व फ़रअ सब उनमें एक साथ जमा हैं।
- उनमें वालिद, शौहर और हसनैन जिन को अल्लाह ने पाक किया और उनसे शोरफ़ा की नस्ल चली।
- इल्म के ज़रीया हिदायत की कोई रौशनी नहीं फूटी मगर यह कि उस सूरज की रौशनी आप तक ज़रूर पहुँचती हैं।
- रशद व इर्शाद का कोई सितारा नहीं रौशन हुआ मगर यह कि आसमान में आप लोग चलते ज़रूर नज़र आए।
- हर्गिज़ कोई मुजाहिद राह नहीं चला मगर वह आपकी रौशन सुन्नत पर अमल पैरा हुवा।
- ऐ मुहम्मद की लख़्ते जिगर आपके बुलंद व बाला और वाईस शर्फ़े मुक़ाम तक औरतें कहाँ पहुँच सकती हैं।

- बहुत से अज्ज़ा मिल कर भी मख़्लूक़ात में सबसे बेहतर के एक जुज़ की बराबरी कहाँ कर सकती हैं।
- आप लोगों के मुतआल्लिक़ गुफ्तगू करके हम ने अपने दिल को पाकीज़ा किया है कि उस नूरानी गुफ्तगू से रौशनी मिलती हैं।
- मैं ने दावत को सब तक पहुँचाने की ठानी है कि आप लोग उनके तामीरी उसुलों का जमाल हैं।
- और मैं ने आप लोगों के जमाल को अपना मज़हब बना लिया है कि उससे तंग और नुक़्सान दूर हो जाते हैं।
- और उसके ज़रिया मुझे मुराआत व हिदायत नसीब होती है और जिस्म को तवानाइ और दिल को शिफ़ा मिलती हैं।
- ऐ उनके रब्बे करीम ! मैं उन लोगों के वस्ल का हरीस हूँ दुनिया व आख़िरत में क़ुबूलियत की उम्मीद करते हुए।
- और रहमान उनके वास्ता से अपने फज़्ल को मुझ पर आम करता है और वह तो करीम है उसकी शान ही अता है।
- ऐ अल्लाह ﷻ! दुरूद भेज नबी ﷺ और आले नबी ﷺ पर और अपने सलाम से उन सब को मालामाल कर दे।

# 11. يوم السرور بمولد الزهراء رضی اللہ عنہا

يا يوم مولد فاطم الزهراء     يا صبح شمس الا لفيك غنائى
فيك السنا عم القلوب مذكرا     يوم السرور الصفوة البشراء
سعد ان ذاك العام كانا للنبى     حل النزاع ومولد الزهراء
سعد ت قريش باكتمال بناء ها     وبفاطم سعدت ذرى الأ رجاء
حفل أقيمت فى السماء أصوله     فتبادل الأ ملاك كأ س ثناء
الكون يشهد انها اشراقة     و سعادة الآ باء بالأ بناء
بنت تصدت للطغاة بمكة     اذبارزوا المختار بالايذاء
و تكبدت عب ء الحياة بقوة     زمنا وما كانت من الضعفاء
والله زوجها عليا من نما     فى حصن أحمد سيد الكرماء
قد شاء الهنا لعناية     سبقت لبيت كرامة وإباء
وسلوا الحوادث عن عظيم فعالها     هل مثل فاطمة ببنت نساء
وسلوا الا مومة ياترى هل كحلت     عينا حنان بعدها بوفاء
تالله ليس كمثلها أ بدا فقد     فاقت نساء الأ رض والجوزاء
هى فاطم الحوراء بنت خديجة     هى زوج سيدنا أ بى الغرباء
أ م لحسينين الكرام و عترة     بهم القبول لجنسنا الخطاء
هى فاطم الزهراء من رسمت لنا     معنى العفاف وحجة البلغاء
بر فاتها خبر أتى يحكى لنا     علم البتول وحكمة الحكماء
فسلوا المروء ة كلها هل فضلت     الا فاطمة لدى الفضلاء

يــابـنــت طــه أنتك مـنـى أحرف — تـرجـوالـوصـول وحلية الصلحاء

مــاقـلـت شيـئـا فــالسـجـايـا جمة — تـربــو عـلى الأعلى دباء والشعراء

أزكى الصلاة على أبيك المصطفى — والآل كـــل صبيـــحة ومســـاء

والـصـحـب ولأزواج ثـم لفـاطم — فـهـى السـرور لـصـفـوة البشـراء

(ईन अरबी अश्आर का तर्जुमा कुछ ईस तरह है।)

## सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا का यौमे विलादत  ख़ुशी का दिन है

- ऐ फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا की विलादत के दिन ऐ अहले बैत के सूरज की सुब्ह तेरे सिलसिला में मेरा यह अशआर हैं।
- तेरी बुलंदी तमाम दिलों में याद बन कर आम हो गई ख़ुशी के दिन ख़ालिस ख़ुशख़बरी के सब्बा।
- वह साल नबी ﷺ के लिये दो वजहों से सआदत मंदाना हुआ कि नज़ा'अ हल हुआ और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की विलादत हुई।
- क़ुरैश को उसकी तामीर के मुकम्मल होने की सआदत नसीब हुइ और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की विलादत की सआदत मिली जो उम्मीदों की चोटी पर पहुँच गईं।
- आसमान पर एक महफ़िल मुनअक़िद हुई जिसमें फ़रिश्तों ने उनकी तारीफ़ का आपस में तबादिला किया।
- काएनात की शहादत है कि वह रौशन कारनामों वाली हैं और वालिदैन की सआदत औलाद की नेक बख़्ती में होती हैं।

- वह बेटी कि जब मुक्का मुकर्रमा में सर-कशों ने अहमद-ए-मुख़्तार ﷺ को तकलीफ़ पहुँचानी चाही तो वोह आड़ बन गईं।
- ज़िंदगी की थकन व तकलीफ़ को पूरी क़ुव्वत से एक ज़माने तक झेलती रहीं जबकि कमज़ोर नहीं थीं।
- बा-ख़ुदा उनके शौहर अ़ली رضي الله عنه हैं जिनकी परवरिश शरीफ़ों के सरदार हुज़ूर ﷺ की आग़ौश में व हिफ़ाज़त में हुई।
- हमारे माबूद बरहक़ ने यह तवज्जो इस लिए फ़रमाई कि इस घर को पहले ही करामत नसीब हो चुकी थी।
- हवादिस ज़माना से पूछो उन के बुलंद पाया कारहाए नुमायाँ के मुतअल्लिक़ क्या औरतों में फ़ातिमा सी किसी की बेटी हैं।
- और ऐ देखने वाले किसी माँ से पूछो कि क्या उनके बाद आँखों में किसी की वफ़ा का सुर्मा लगाया गया है।
- ब-ख़ुदा उनके मिस्ल कोई नहीं हो सकता कि वह रू-ए-ज़मीन की औरतों और जोज़ाअ नामी आसमान के एक बुर्ज से भी फाइक़ हैं।
- हज़रात हसनैन رضي الله عنهما की वलिदा और उनके कुंबा के सबब नाक़िस लोग भी क़ुबूल हो जाएंगे।
- यह हैं फ़ातिमा ज़हरा رضي الله عنها जिन्होंने हमारे लिए इफ़्फ़त के मानी और बलीग़ों की दलील को मुतअय्यन किया।
- मुरव्वत से पूछो क्या फ़ुज़ला के यहाँ भी वैसे ही पाई जाती है जैसी फ़ज़ीलत मुरव्वत से फ़ातिमा رضي الله عنها को हासिल हैं।
- ऐ बिंते नबी ﷺ आपकी शान में मेरे यह चंद हुरुफ़ हैं जिनके पहुँचने की उम्मीद और सालेहीन का ज़ेवर बन जाने की उम्मीद हैं।

- मैं ने तो अभी कुछ भी नहीं किया है कि इतनी ज़ियादा आदात व ख़साएल हैं कि उदबा शोअरा के लिए वह बहुत हैं।
- आप के वालिद हज़रत मुस्तफ़ा ﷺ पर और आले बैत पर सुब्ह व शाम दुरूद नाज़िल हो
- और तमाम सहाबा व अज़्वाज पर दुरूद हो और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا पर दुरूद कि वह ख़ुशी हैं ख़ालिस ख़ुशख़बरी की।

أحبتی هذه أبيات كتبتها فی دوحة العلم والأدب سيدتنا فاطمة الزهرا رضی الله عنها و عليها السلام أهديها لكل من تعلق بحبها علی كافة الأفكار والمعتقدات،راجيا من الله تعالیٰ أن تعجب المتعلقين بحضرة النبی صلی الله عليه وآله وسلم و عدم اساءة الظن بی فی أننی أريد أن أشعل فتيلة والا ختلاف وإننی محب وللمحب رجاء۔

| | |
|---|---|
| طيبوا مجلسنا الخاتمه | واذكروا أم بيها فاطمه |
| شفوا سمعی بذكر الطهر من | شاء ها ربی تكون الراحمه |
| بحر علم سفن الفهم به | لم تزل يا صالح فيه عائمه |
| كيف لا والمصطفی والدها | وعلی بابه كن لازمه |
| دوحتا مجد لكل الأعصر | بحسين وأخيه دائمه |
| وسری نورهما ياصاحبی | فی الذی والا همو للخاتمه |
| فلهذا المسر طابت حضرة | لم تزل بالحمد شكر اقائمه |
| و رجال الله فيها حضروا | ونجلت عنا هموم قاتمه |
| وتنادت كل أملاك السما | ها هنا قوم بطه هائمه |

**तरजुमा:** यह अशआर हैं जो मैं ने मरकज़े इल्म ओ अदब सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की शान में कहा है, मैं उन अशआर को हर उस शख़्स को हद्या करता

हूँ जो तमाम अफ़्कार व अक़ाइद के साथ उनसे मुहब्बत करता हो अल्लाह तआला से उम्मीद करते हुए कि वह नबी ﷺ और उन की आल से मुहब्बत करने वाले को पसंद करता हैं। मेरे मुतआल्लिक़ यह बद-गुमानी नहीं होनी चाहिये कि मैं फ़ितना व इख़्तिलाफ़ को जंब देना चाहता हूँ। मैं तो मुहब्बत करने वाला हूँ और मुहब्बत करने वाला महज़ उम्मीद करता हैं।

- मजलिस को ख़ातिमा के इतिबार से मुबारक बनाओ और ज़िक्र करो उम्मे अबीहा फ़ातिमा رضي الله عنها का।
- मेरी समाअतों को मुज़य्यन करो उस पाकीज़ा सिफ़त के ज़िक्र से जिसके मुतआल्लिक़ मेरे रब ने भी चाहा कि वह रहम करनेवाली हो।
- ऐ आवाज़ लगाने वाले वह इल्म का समुंदर हैं कि उनको समझने से अक़्ले अब तक क़ासिर हैं।
- और यह क्यौं न हो जबकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ उनके वालिद (जो कि शहरे इल्म) और अ़ली رضي الله عنه उसके दरवाज़े हैं तो तुम उनको लाज़िम पकड़ो।
- हर ज़माने के लिए हमेशा हज़रात हसनैन رضي الله عنهما मजिद व बुज़ुर्गी के मरजा व पैमाना हैं।
- ऐ मेरे दोनों साथियों मेरा राज़ दोनों का नूर है उसके सिलसिला मैं जो ख़ातिमा को जारी रखने के लिए है।
- उस राज़ के लिए वह हमेशा मुबारक व मौज़ूँ रहीं और बराबर हम्द-व-शुक्र के साथ क़ाइम रहें।
- उनके पास बहुत अल्लाह عزوجل के बंदे हाज़िर हुए और हम से बहुत सारे शदीद ग़म का ज़ुहूर हुआ।
- तमाम आसमान के फ़रिश्ते पुकारते हैं कि हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत करने वाले लोग यहाँ हैं।

# 12. نشيد فی حمی الزهراء رضی اللہ عنہا

| | |
|---|---|
| فـی حـمـی الـزهـراء نـحـن | من عـلـى الأ حبـاب تـحنو |
| يـــا مــحبيهـــا فيهـــا | كـلـكـم فيهـا فـغـنـوا |
| فـــاطـم "قـلـب" سـليـم | فـــاطـم "نـور" عـظـيـم |
| يـــامـــحبيهـــا فهيـــا | بـعـضـكـم بـعـضـا فهنوا |
| فـــاطـــم" ام أ بيهـــا" | صـار قـلـبـي من سببهـا |
| يـــا مــحبيهـــا فهيـــا | بـقـبـولـي الـقـلـب منو |
| فـــاطـم جـنـة مـأوى | هـــي مـن هـــي سـلـوى |
| يـــا مــحبيهـــا فهيـــا | ســتـــي فيهـــا فسـنـوا |
| فـــاطـم أم الـعـلـوم | ذكـرهـا يـجلي هـمـومي |
| يـــا مــحبيهـــا فهيـــا | فـــاطـم فـي الـعـلـم فـن |
| فـــاطـم "نـعـم البتـول" | فـــاطـم "بـنـت الـرسـول |
| يـــا مــحبيهـــا فهيـــا | خـلـفـكـم أنـــس وجـن |
| فـــاطـم "زوج عـلـي" | زوجـهـــا خـيـــر ولـي |
| مـن يـو اليـــه يـوالـي | فيـكـم آل فـمـنـو |

इस मन्कबत का तर्जुमा अगले पेज पर है।

# सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा ﵂ के लिए एक मन्क़बत

- हम फ़ातिमा ﵂ की हिमायत व हिफ़ाज़त में हैं, कौन है जो अहबाब का इश्तियाक़ रखता है।
- ऐ सबके सब इनके लिए मुहब्बत करने वालों गुनगुनाओ।
- फ़ातिमा ﵂ बहुत बड़े दिल वाली और नूरे अज़ीम हैं।
- ऐ उनके लिए आपस में मुहब्बत करने वालो, एक दूसरे को मुबरकबाद दो।
- फ़ातिमा ﵂ उम्मे अबीहा कि मेरा दिल उनका असीर हैं।
- ऐ उनके लिए मुहब्बत करने वाले मेरे दिल के क़ुबूल होने का एहसान मानो।
- फ़ातिमा ﵂ जन्नत का ठिकाना और मन्न-व-सल्व हैं।
- ऐ उनके लिए मुहब्बत करने वाले उनके सिलसिले में यही मेरा मज़हब है तुम भी अख़्तियार करो।
- फ़ातिमा ﵂ बहरे उलूम हैं इनका ज़िक्र मेरे ग़म मेरी परेशानियों को दूर कर देता हैं।
- ऐ उनके लिए मुहब्बत करने वाले फ़ातिमा ﵂ इल्म में एक फ़न का मर्तबा रखती हैं।
- फ़ातिमा ﵂ क्या ही ख़ूब बतूल हैं फ़ातिमा ﵂ बिंते रसूल ﷺ हैं।
- ऐ उनके लिए मुहब्बत करने वाले तुम्हारे पीछे इंसान व जिन्नात हैं।
- फ़ातिमा ﵂ के शौहर हज़रत अ़ली ﵁ हैं और वह ख़ैरे वली हैं।
- तो जो उनसे दोस्ती करता हैं वह दोस्ती करता है तमाम आल से, तुम्हारे लिए बेहतर है कि अहले बैत के साथ भलाई करो।

هـذه الـقصيدة اهديها لكل آل بيت المصطفى والسادة الأشـراف بـمـنـاسبة زواج مـولانا السيدة الزهراء عليها السلام بـابـن عـم الـمـصطفى۔ صلى الله عليه واله وسلم، فى مثل هذه الأيام المباركه، وظهور الائمة الأعلام۔

مـلاحـظة : اقتبست هنا آيةقرانية من سورة الكوثر وهذا الأ مر لا بأس به شرعا و ذوقاوقد سبقنى اليه الكثيرون۔

والـكـوثـر كـمـا هو معروف نهر فى الجنة، ولغة وزن فوعل التى تـدل هـذه وجـاء فـى مـعـظم التفاسير أن الكوثر هو السيدة الزهراء عليها سلام الله و سوف والله أسال أ ن ينال إعجابكم الكريم۔

**तरजुमा :**

यह क़सीदा मैं मनसूब करता हूँ अहले बैत मुस्तफ़ा ﷺ और अशराफ़ सादात को अपनी सय्यिदा फ़ातिमा رضي الله عنها की अज़्वाज के मौक़ा पर हुज़ूर ﷺ के चचा-ज़ाद भाई अ़ली رضي الله عنه से उनही मुबारक दिनों में और अइम्मा-ए-एलाम के ज़ुहूर के वक़्त ।

**नोट : यहाँ मैं ने एक क़ुरआनी आयात सूरह कौषर का इक़्तिबास लिया है, इसमें शरई और ज़ौक़ के इतिबार से कोई क़बाहत नहीं है कि मुझ से पहले से लोग ऐसा कर चुके हैं ।**

और अक्सर जन्नत की एक नहर है जैसा कि मारूफ़ है और फौअल के वज़न पर है जो के सेग़ाए कसरत है, यह सेग़ा हर शय में कसरत के मानी पर दलालत करता है ।

बहुत सी तफ़्सीरों में आया है कि कौषर सय्यिदा फ़ातिमा رضي الله عنها है, अल्लाह ﷻ से दुआ है कि आप उसे क़ुबूल फ़रमाएं ।

| | |
|---|---|
| انـــا أعيــطيــنـــاك الـكــوثــر | هــذا قــول الــمــولــى الأ كـبــر |
| نهـــر فـــى الـجـنة لا ينـكــر | هـــو فــــاطــمة قــول يــوثــر |
| هـــى بـضــعة مــن نـال الاسـرا | هـــى بــنـــت خديجة الكبــرى |
| هـــــى أم أ بيهـــــاوالــــزهـــرا | و بتـــــول أنـــــوار تـــــزهـــــر |
| أ بــدالـــو لاهـــا مـــاكـــانـــا | آل بهـــمــــو نـــمـــحـــو الـــرانـــا |
| فــخـــر أن نــمــد حـهـــا الآنـــا | فـبـــمـــو لـــد هـــــا عــبــد أكـبــر |
| يـــامـــن قـــام الـــمـــخـتـــار لـهـا | عـــطـــفـــا بـعـيــد كــان لـهـى |
| حـب الـحـسـنـيـن غـدا كـنـهـى | بـشـفــاعـتـكـم ذنـبـى يـغـفـر |
| و صـــلاة الله عله الهـا دى | مــن طـــاب بــه ذاك الـوادى |
| آل صـــحــــب هـــم امـــدادى | ووســيـــلـتــنـــا يــوم الــمــحـشـر |

**तरजुमा :**

- हमने आपको कौषर अता किया यह क़ौल है अल्लाह ﷻ का ।
- जन्नत में एक नहर है जिसका इंकार नहीं किया जा सका ।

  वोह फ़ातिमा رضي الله عنها हैं कि इसी क़ौल को तरजीह दी जाती है ।
- यह उस शख़्सियत की बेटी हैं जिनको मेराज नसीब हुई यह ख़दीजतुल-कुब्रा رضي الله عنها की साहबज़ादी हैं ।
- यह उम्मे अबीहा, ज़हरा बतूल हैं और ऐसे अनवार हैं जो ख़िलते हैं ।
- यक़ीनन अगर वह न होतीं तो अहले बैत का सिलसिला जारी न रहता और हम इस बड़ी चीज़ को भूला देते ।
- फख़्र की बात है कि इस वक़्त हम उनकी मदह कर रहे हैं तो उनकी विलादत ईदे अकबर है ।

- ऐ वोह शख़्स कि जिस छोटे से बंदे पर लुत्फ़-व-इनायत के सबब अहमदे मुख़्तार ﷺ खड़े हुए वोह यही हैं।
- हज़राते हसनैन رضی اللہ عنہما की मुहब्बत मेरा मक़सद बन गई है, आप लोगों की शफ़ाअत से ही मेरे गुनाह मुआफ किए जाएंगे।
- अल्लाह ﷻ का दुरुद-व-सलाम हो इस हादी पर उस पर जो इस वादी को अख़्तियार करके ख़ुश-बख़्त हुआ।
- आल-व-असहाब ही मेरी मद्द करने वाले हैं और यौमे हश्र मेरा वसीला हैं।

# 13. तसबीहात सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा ﷺ

हज़रत अ़ली ﷺ ने अपने एक शागिर्द से फ़रमाया कि मैं तुम्हें अपना और फ़ातिमा ﷺ का जो हुज़ूर ﷺ की सबसे ज़्यादा लाडली बेटी थीं क़िस्सा सुनाऊं। शागिर्द ने कहा ज़रूर, फ़रमाया कि वह अपने हाथ से चक्की पीसती थीं जिसकी वजह से हाथ में निशान पड़ गए थे और ख़ुद पानी कि मशक भर कर लाती थीं, जिसकी वजह से सीना पर मशक की रस्सी के निशान पड़ गए थे और घर की झाड़ वग़ैरह भी ख़ुद ही देती थीं जिसकी वजह से तमाम कपड़े मैले-कुचैले रहते थे। एक मरतबा हुज़ूरे अक़दस ﷺ के पास कुछ गुलाम बाँदियाँ आईं। मैं ने फ़ातिमा ﷺ से कहा कि तुम भी जा कर हुज़ूर ﷺ से एक ख़िदमतगार माँग लो ताकि तुम को कुछ मदद मिल जावे। वह हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं वहाँ मजमा था और शर्म मिज़ाज में बहुत ज़्यादा थी। इसलिए शर्म की वजह से सबके सामने बाप से भी माँगते हुए शर्म आई। वापस आ गईं। दूसरे दिन हुज़ूर-ए-अक़दस ﷺ तशरीफ़ लाए इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा ﷺ कल तुम किस काम के लिए गईं थीं। वह शर्म की वजह से चुप हो गईं। मैं ने अर्ज़ किया कि "या रसूलुल्लाह ﷺ उनकी यह हालत है कि चक्की की वजह से हाथों में गट्टे पड़ गए और मशक की वजह स सीना पर रस्सी के निशान हो गए। हर वक़्त के कारोबार की वजह से कपड़े मैले रहते हैं। मैं ने उनसे कल कहा कि आप ﷺ के पास ख़ादिम आए हुए हैं, एक यह भी माँग लें इसलिए गईं थीं।" बाज़ रिवायात मे आया है कि हज़रत फ़ातिमा ﷺ ने अरज़ किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ मेरे और अ़ली ﷺ के पास एक ही बिस्तर है और वह भी मेंढ़े की एक ख़ाल है रात को उसको बिछा कर सो जाते हैं। सुब्ह को उसी पर घास दाना डाल कर ऊँट को ख़िलाते हैं। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि "बेटी सब्र करो। हज़रत मूसा ﷺ और उनकी बीवी के पास दस बरस तक एक ही बिछौना (बिस्तर) था वह भी हज़रत मूसा ﷺ का

चोग़ा था। रातो को उसी को बिछा कर सो जाते थे। तक़वा हासिल करो और अल्लाह से डरो और अपने परवरदिगार को फ़रीज़ा अदा करती रहो और घर के कारोबार को अनजाम देती रहो और जब सोने के वासते लेटा करो तो سبحان الله तैतीस(33) मर्तबा الحمد لله तैतीस(33) मर्तबा और الله اكبر चौतीस(34) मर्तबा पढ़ लिया करो। यह ख़ादिम से ज़्यादा अच्छी चीज़ है।" हज़रत फ़ातिमा ﷺ ने अरज़ किया "मैं अल्लाह ﷻ से और उसके रसूल ﷺ से राज़ी हूं।" यानी जो अल्लाह ﷻ की और उसके रसूल ﷺ के रज़ा मेरे बारे में हो मुझे ब-ख़ुशी मंज़ूर है। यह थी ज़िंदगी दो-जहाँ के बादशाह की बेटी की।

(हिकायाते सहाबा, शैख़ुलहदीस हज़रत मौलाना ज़करिया साहब)

**अल्लामा शिब्ली नोमानी ने इस वाक़िया का नक़्शा इस तरह खींचा है :**

अफ़लास से था सय्यिदाए पाक का यह हाल — घर में कोई कनीज़ न कोई ग़ुलाम था
घिस गई थीं हाथ की दोनों हथेलियाँ — चक्की के पीसने का जो दिन-रात काम था
सीना पे मशक बहर के जो लाती थीं बार-बार — गो नूर से भरा था मगर नील-फ़ाम था
अट जाता था लिबासे मुबारक ग़ुबार से — झाड़ू का मश्ग़िला भी हर सुब्ह-व-शाम था
आख़िर गईं जनाबे रसूले ख़ुदा ﷺ के पास — यह भी कुछ इत्तिफ़ाक़ वहाँ इज़्ने आम था
महरम न थे जो लोग तो कुछ कर सकें न अर्ज़ — वापस गईं कि पास हया का मुक़ाम था
फिर जब गईं दोबारा तो पूछा हुज़ूर ﷺ ने — कल किस लिए तुम आई थीं क्या ख़ास काम था
ग़ैरत यह थी कि अब भी न कुछ मुँह से कहें — हैदर ﷺ ने उनके मुँह से कहा जो पयाम था
इरशाद यह हुआ कि ग़रीबाने बे-वतन — जिनका कि सफ़ा-ए-नबवी में क़याम था
मैं उनके बंद-ओ-बस्त से फ़ारिग़ नहीं हुनूज़ — हर-चंद इसमें ख़ास मुझे इह्तिमाम था
जो जो मुसीबतें कि अब उनपर गुज़रती हैं — मैं इसका ज़िमा-दार हूँ मेरा यह काम था
कुछ तुम से भी ज़्यादा मुक़द्दम था उनका हक़ — जिनको कि भूक-प्यास से सोना हराम था
ख़ामूश हो के सय्यिदा-पाक रह गईं — जुरअत न कर सकीं कि अदब का मुक़ाम था

यूँ कि बसर हर अहले बैते मुतह्हर ने ज़िंदगी
यह माजराए दुख़्तरे ख़ैरुलअनाम ﷺ था

# 14. حدیث فاطمة بضعة منی

## हदीष : फातिमा बिदअतुम मिन्नी

## हुज़ूर नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

## “फ़ातिमा मेरा टुकड़ा है”

(सहीह बुख़ारी, रक़म: 3510, सहीह मुस्लिम, रक़्म 3665)

### अल्फ़ाज़े हदीस

1. “فاطمة بضعة منی فمن اغضبها اغضبنی” “फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा टुकड़ा है जिसने उसे ग़ज़बनाक किया उसने मुझे ग़ज़बनाक किया”
2. “فاطمة بضعة منی یوذینی ما اذاها و یغضبنی ما اغضبها”
“फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा टुकड़ा है जो चीज़ उसे अज़ीय्यत देती है मुझे अज़ीय्यत देती है और मुझे ग़ज़बनाक करती है जो चीज़ उसको ग़ज़बनाक करती है।”
3. “فاطمة بضعة منی یقبضنی ما یقبضها و یبطی ما یبطنها”
“फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा जुज़ है जो उसको नागवार है मुझे भी नागवार है जो बात उसको ख़ुश करती है मुझको भी ख़ुश करती है।”
4. “فاطمة بضعة منی یوذینی ما اذاها و ینیصنی ما انبصها”
“फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा हिस्सा है जो चीज़ उसको अज़ीय्यत देगी मुझको अज़ीय्यत देगी और जो बात उससे दुश्मनी का सबब होगी मेरी दुश्मनी का सबब है।” (ताजुलउरूस ने लिखा है कि मेरे तअब का सबब होगी।)
5. “فاطمة بضعة منی یرینبی ما راالبها یوذینی ما آدها” “फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा ही एक जुज़ है जो फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को धोका देगा मुजे धोका देगा और जो चीज़ उसको अज़ीय्यत देगी मुझे अज़ीय्यत देगी।”

6. "فاطمة بضعة منى مايسعفنى مايسعفها فى العروس اى ينالنى ماينالها"
"फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा हिस्सा हैं जो फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को दुख देगा वो मुझे दुख देगा।" (ताजुलउरूस में है कि मुझे वही सदमा होगा जो फ़ातिमा رضی اللہ عنہا को होगा।)
7. "فاطمة شجة منى يبسطنى مايبسطها ويقبضنى مايقبضها"
"फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरी शाख़ है जो उसको ख़ुश करेगा मुझे ख़ुश करेगा और जो बात उसको नागवार होगी मुझे भी होगी।"
8. "فاطمة مضغة منى فمن آذاها فقد اذانى" "फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा एक टूकड़ा है जो उसको सताएगा मुझे सताएगा।"
9. "فاطمة مضغة منى يقبضنى ماقبضها ويبسطنى مايبطها"
"फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा एक टुकड़ा है जो बात उसे नागवार है मुझे भी नागवार है और जो चीज़ उसे ख़ुश करती हैं मुझे भी ख़ुश करती हैं।"
10. "فاطمة مضغة منى يسرتى مايسرها" "फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरा ही टुकड़ा है और जो चीज़ उसको ख़ुश करती है मुझे ख़ुश करती है।"

★ **वोह उलमा और मुहद्दिसीन जिन्होंने इस हदीष को रिवायत किया है :**

- **सिहाह सित्ता और दीगर किताबों में इख़्तलाफ़ अलफ़ाज़ के साथ यह हदीष भी उलमाए रिजाल ने नक़्ल की है उन हज़रात के असमाए गिरामी यह हैं :**

1. इब्ने अबी मिल्किया رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा 117 हिजरी ने जैसा कि **बुख़ारी व मुस्लिम** की रिवायत में है और **इब्ने अबी माजा व इब्ने दाऊद व अहमद और हाकिम** رحمۃ اللہ علیہم से मनक़ूल है।
2. अबु-उमर बिन दीनार मक्की رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 125 ही. ने जबकि **सहीहैन बुख़ारी व मुस्लिम** में है।

3. लैस बिन साद मिसरी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 175 हि. जैसा कि इसनाद **इब्ने माजा व इब्ने दाऊद और अहमद** رحمۃ اللہ علیہ ने नक़्ल किया है।
4. अबू मुहम्मद बिन ऐनिया कूफ़ी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 198 हि. जबकि **सहिहैन** में है।
5. अबू नसर शम बग़दादी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 205 हि. जैसा कि **मुस्नद अहमद** में है।
6. अहमद बिन युसुफ़ यरलैग़ी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 227 हि. जैसा कि **सहीह मुस्लिम व सुनन अबू दाऊद** में है।
7. हाफिज़ अबुल वलीद तय्यालसी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 227 हि. जैसा कि **सहीह बुख़ारी** में है।
8. अबुल मुअम्मर رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 236 हि. जैसा कि **मुस्लिम** में है।
9. कुतैबा बिन सईद सक़फ़ी رحمۃ اللہ علیہ सन 240 हि. उनसे **'मुस्लिम'** और **'अबू दाऊद'** ने रिवायत की है।
10. ऐन बिन हम्माद मिसरी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 248 हि. इनसे **इब्ने माजा** ने रिवायत की है।
11. इमाम अल हम्बल अहमद رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 241 हि. ने अपनी **'मुस्नद'** जिल्द 4, सफ़हा 322, 328 पर दर्ज किया है।
12. हाफ़िज़ बुख़ारी अबू अब्दुल्लाह رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 206 हि. ने अपनी **'सहीह'** मनाक़िब जिल्द 5, सफ़हा 274 पर दर्ज किया है।
13. हाफ़िज़ मुस्लिम क़शीरी رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा 261 ही. ने अपनी **'सहीह'** फील फज़ाइल जिल्द 2, सफ़हा 261 पर दर्ज किया है।
14. हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह इब्ने माजा رحمۃ اللہ علیہ मुतवफ़्फ़ा सन 272 हि. ने अपनी **'सुनन'** जिल्द 1, सफ़हा 216 पर दर्ज किया है।

15. हाफ़िज़ अबू दाऊद सबहस्तानी मुतवफ़्फ़ा सन 275 हि. ने **'इब्ने सुनन'** जिल्द 1, सफ़हा 324 पर लिखा है।
16. हाफ़िज़ अबू ईसा तिर्मिज़ी मुतवफ़्फ़ा सन 275 हि. ने अपनी **'जामा'** जिल्द 2, सफ़हा 319 में पर लिखा है।
17. हकीम अबू अब्दुल्लाह तिर्मिज़ी मुहद्दिस मुतवफ़्फ़ा 285 हि. ने **'नवादिरुलउसूल'** सफ़हा 308 पर दर्ज किया है।
18. हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह अन-निसाई मुतवफ़्फ़ा सन 303 हि. अपनी **'ख़साइस'** सफ़हा 35 पर लिखते हैं।
19. हाकिम अबु अब्दुल्लाह नेशापूरी मुतवफ़्फ़ा सन 405 हि. **'मुस्तदरक'** जिल्द 4, सफ़हा 154, 108, 109 पर लिखते हैं।
20. हाफ़िज़ अबु नुएम इस्फ़हानी मुतवफ़्फ़ा सन 430 ही. ने **'हिलयतुल औलिया'** जिल्द 2, सफ़हा 40 पर लिखा है।
21. हाफ़िज़ अबू बकर बैहक़ी मुतवफ़्फ़ा सन 458 हि. ने **'सुनने कुबरा'** जिल्द 7, सफ़हा 307 पर लिखा है।
22. अबु ज़करिया ख़तीब तबरेज़ी मुतवफ़्फ़ा 502 हि. ने **'मिशकातुल-मसाबीह'** सफ़हा 560 पर तहरीर किया है।
23. हाफ़ीज़ अबुल-क़ासिम बग़वी मुतवफ़्फ़ा सन 510 हि. ने **'मसाबीहुल-सुन्नह'** जिल्द 2, सफ़हा 278 पर लिखा है।
24. क़ाज़ी अबुलफज़्ल अयाज़ मुतवफ़्फ़ा सन 544 हि. ने सफ़ा जिल्द 2, सफ़हा 19 पर तहरीर किया है।
25. हाफ़िज़ अबुल्क़ासीम इब्ने असाकिर मुतवफ़्फ़ा सन 571 हि. ने अपनी **'तारीख़'** की जिल्द 1, सफ़हा 298 पर लिखा है।
26. अबुलफ़र्ज इब्ने जौज़ी मुतवफ़्फ़ा सन 597 हि. ने **'सफ़्फ़तुल**

**सफ़वाह'** जिल्द 2, सफ़हा 5 पर लिखा हैं।

27. हाफ़ीज़ अबुलहसन बिन असीर अल जज़री मुतवफ़्फ़ा सन 630 हि. ने **'असदुल-ग़ाबा'** सफ़हा 521 पर लिखा है।
28. सिब्त इब्ने जौज़ी हनफ़ी मुतवफ़्फ़ा सन 604 ने **'तज़्किरा'** में सफ़हा 175 पर लिखा है।
29. हाफ़िज़ मुहिब्बुद्दीन तिबरी मुतवफ़्फ़ा सन 694 हि. ने **'ज़ख़ाइरुल उक़बा'** सफ़हा 37 पर लिखा है।
30. हाफ़िज़ ज़हबी शाफ़ई मुतवफ़्फ़ा सन 747 ने **'तलख़ीसे अलमुस्तदरक'** में लिखा है।
31. जमालुद्दीन मुहम्मद ज़रनदी हनफ़ी मुतवफ़्फ़ा सन 750 हि. **'दुररुलसमीतीन'** पर तहरीर फ़रमाते हैं।
32. अबुलसआदत याफ़ई मुतवफ़्फ़ा सन 768 हि. ने **'मिरातुल जिनान'** जिल्द 1, सफ़हा 61 पर लिखा है।
33. हाफ़ीज़ नुरुद्दीन हैषमी मुतवफ़्फ़ा सन 807 हि. ने **'मजमउल ज़वायद'** जिल्द 9 में सफ़हा 307 पर लिखा हैं।
34. हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी मुतवफ़्फ़ा सन 802 हि. ने **'तेहज़ीबुत्तेहज़ीब'** जिल्द 12, सफ़हा 441 पर लिखा है।
35. हाफ़ीज़ जलालुद्दीन सुयूती मुतवफ़्फ़ा सन 911 हि. ने **'जामिउस्सग़ीर'** में लिखा है।
36. हाफ़िज़ अबुलअयास असक़लानी मुतवफ़्फ़ा सन 933 हि. ने **'मवाहिबुद्दुनिया'** में तहरीर किया है।
37. क़ाज़ी ब्यार बकरी मालकी मुतवफ़्फ़ा सन 966 हि. **'तारीख़े ख़मीस'** जिल्द 1, सफ़हा 464 पर लिखा है।

38. इब्ने हजर हैषमी ﷫ मुतवफ़्फ़ा सन 974 हि. ने **'सवाइक़'** में सफ़हा 112 पर तहरीर किया है।

39. ज़ैनुद्दीन मुनावी ﷫ मुतवफ़्फ़ा 1031 हि. ने **'कुनूज़ुल हक़ाइक़'** सफ़हा 96 पर लिखा है।

## शरहे हदीष

हाफ़िज़ क़ुस्तलानी ﷫ ने **فاطمة بضعة منی فمن اغضبها** के ज़िम्न में लिखा है कि एक रिवायतमें **"ویوذینی ماآذها"** वारिद हुआ हैं।

लोगों ने कहा कि आँ-हज़रत ﷺ को किसी नहज से अज़ीय्यत देना हराम है ख़्वाह किसी तरह भी हो अगर्चे इस्लाए मबाह हो। यह बात आँ-हज़रत ﷺ के ख़ुसूसियात में से है।

**(इर्शादुलबारी फ़ी शरह जिल्द 6, सफ़हा 121)**

**अल्लामा नोव्वी** ﷫ ने 'शरहे सहीह मुस्लिम' में कहा है कि उलमा का फ़रमान इस हदीष के बारे में यह है कि हर हाल में और हर तरह से नबी ﷺ को अज़ीय्यत पहुँचाना हराम है।

**अल्लामा मुनावी** ﷫ ने 'फ़ैज़ुलक़दीर' में इस हदीष के ज़िम्न में लिखा है कि इससे इमाम सुहैली ﷫ ने यह इस्तिदलाल किया है कि जो भी फ़ातिमा ज़हरा ؓ को गाली देगा वह काफ़िर है इसलिए कि उससे रसूलुल्लाह ﷺ ग़ज़बनाक होंगे और यह कि फ़ातिमा ؓ शैख़ेन हज़रत अबूबक्र और उमर ؓ से अफ़ज़ल हैं।

यही वजह है कि जब उम्मुल फ़ज़्ल ने एक ख़्वाब देखा कि रसूलुल्लाह ﷺ का एक हिस्सा ख़ुद आप की आग़ोश में आ गिरा है तो उनके ख़्वाब की तावील रसूलुल्लाह ﷺ ने यह बताई की फ़ातिमा ؓ के यहाँ विलादत होने वाली है। एक फ़रज़ंद होगा जो मेरी गोद की ज़ीनत बनेगा और इमाम हसन ؓ दुनिया में आए और आप की आग़ोश की ज़ीनत बने। जिसने भी अब तक जुर्रीयते फ़ातिमा ؓ से किसी को देखा है वह उसी बे-ज़ेअतिर्रसूल का बे-ज़ुआ है चाहे वह चंद वास्तों के साथ हो।

इस सिलसिला में जिसने भी कुछ ग़ौर-व-ख़ौज़ से काम लिया उसके क़ल्ब में आप ﷺ की जलालत के वसाइल व असबाब मुहय्या हुए और उसने अपने आप को आप ﷺ के बुग़्ज़ से महफ़ूज़ कर लिया कि यह लोग हमेशा से जलालत मआब रहे हैं।

**इब्ने हजर** ﷺ का कहना कि उससे यह बात वाज़ह है कि जिनको अज़ीय्यत पहुँचाना ख़ुद मुस्तफ़ा ﷺ की अज़ीय्यत का बाइस है उनको सताना हराम है। लिहाज़ा जिस शख़्स ने भी फ़ातिमा ﷺ के हक़ में कोताही की है उसके इस अमल से नबी ﷺ को अज़ीय्यत पहुँची है।

यह ख़बर ख़ुद एक शहादत है कि फ़ातिमा ﷺ के लिए इससे बड़ी कोई बात नहीं है कि उनके फ़रज़ंद को तकलीफ़ पहुँचाई जाए और क़ाइदे इस्तिक़रा कहता है कि जो भी इसका मुरतकिब हुआ उसने इसी दुनिया में अक़ूबत झेली है जब्कि आख़िरत की सज़ा अभी इससे भी कहीं सख़्त-तर है। (फैज़ुलक़दीर जिल्द 4 सफ़हा 421)

**शहाबुद्दीन आलुदी ﷺ ने इब्ने अब्बास ﷺ के हवाले से नबी ﷺ का फ़रमान नक़्ल किया है। आप ﷺ ने फ़रमाया है कि "चार औरतें इस दुनिया तमाम आलम की औरतों से अफ़ज़ल और सरदार हैं। मरयम बिंते इमरान ﷺ, आसिया बिंते मज़ाहिम ﷺ, ख़दीजा बिंते ख़ुवैलिद ﷺ और फ़ातिमा ﷺ बिंते मुहम्मद ﷺ और उन सबमें फ़ातिमा ﷺ सबकी सरदार हैं।"**

मेरा अपना अक़ीदा यह है कि फ़ातिमा अल-बतूल ﷺ इस उम्मत की अगली पिछली तमाम औरतों पर मुक़द्दम और बा-फ़ज़ीलत व बा-कमाल हैं कि आप जिगर गोशा रसूलुल्लाह ﷺ हैं बल्कि दीगर जहतों और हैसियतों से भी आप सबसे अफ़ज़ल हैं।

इस सिलसिला में किसी भी साबिक़ा रिवायत पर सर धुनने की ज़रूरत नहीं है। क्यूंकि मुमकिन है उन रिवायत को बुनियाद बना कर फ़ातिमा ﷺ पर ग़ैरों को फजीलत देदी जाए किसी भी जेहत या किसी भी पहलू से। मगर चूँकि बे-ज़ईयत कुल्ले वजूद की रूह है और वह तमाम मौजूदात के

आक़ा हैं बिना-बर-ईं उनका मुक़ाबला हम हरगिज़ किसी से भी नहीं कर सकते।

### "अरे कहाँ सुरय्या और कहाँ दस्ते मुहताज"

यहीं से सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की फ़ज़ीलत उम्मुल मोमिनीन आइशा رضی اللہ عنہا पर भी हो वाजेअ जाती है। जब्कि उसके बरख़िलाफ़ अगर्चे बहुत मुहक़्क़ेक़ीन ने नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के इस क़ौल के ज़रिया उनकी अफ़ज़लीयत पर इस्तिदलाल क़ाइम करना चाहा है बल्के "अपने दो तिहाई दीन को हमीरा(सय्यिदा आइशा رضی اللہ عنہا) से" لوخذوا قلثی دینکم من حیمراء

हालाँकि आप जानते हैं इस इहतिजाज का क्या हाल है। यह ख़बर तो अफ़ज़लियत हमीरा पर नस बन ही सकती इसलिए कि ज़्यादा से ज़्यादा इस हदीस में जो बात है वोह यह कि साबित करती है कि हमीरा आलमा हैं इसलिए उनसे दो तिहाई दीन लिया जा सकता है मगर हर गिज़ इस पर दलालत नहीं करती कि कोई दुसरा इस इल्म में उनका ममासिल नहीं हो सकता जबकि फ़ातिमा رضی اللہ عنہا नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की जिगर पारा हैं यानी उन्ही के वजूद का हिस्सा हैं। अब चूँकी नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को इल्म था कि फ़ातिमा رضی اللہ عنہا मेरे बाद ज़्यादा मुद्दत तक इस दुनिया में नहीं रहेंगी के उन से दीन हासिल किया जा सके लिहाज़ा नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के लिए ऐसा कुछ बयान नहीं किया और अगर जानते भी तो नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم शायद इस तरह से कहते कि **"तुम पूरा दीन फ़ातिमा رضی اللہ عنہا से ही लेना"** इलावा इसके आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के वह फ़रमान जिस में आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: "انی تارك فیکم الثقلین کتاب اللہ وعترتی.......النع" **"मैं तुम्हारे लिए दो गिराँ क़द्र छोड़े जा रहा हूँ एक क़ुरआन दुसरे अपनी इतरत। यह दोनों हरगिज़ जुदा न होंगे यहाँ तक कि हौज़े कौषर पर मेरे पास आ जाएं"** यह ख़बर खुद ही इस ख़बर के बराबर खड़ी है बल्कि और ज़्यादा यह किसी पर पोशीदा भी नहीं है।

क्यों न हो फ़ातिमा رضی اللہ عنہا ख़ुद भी इतरत की सरदार हैं।

(तफसीरे रूहुल मआनी जिल्द 3, सफ़हा 155)

## 15. रोज़े महशर शहज़ादीए कौनेन رضی اللہ عنہا की आमद का मन्ज़र

अह्ले बैत अतहार की ज़वाते मुक़द्दसा तक़दीस के अहराम में लिपटी हुई हैं। वक़ार व इहतिराम की चादर उनके सरों पर साया-फिगन है, शहज़ादी-ए-कौनेन رضی اللہ عنہا तो तहारत और पाकीज़गी की अलामत हैं। चश्मे फ़लक भी उनके इहतिराम में झुक जाती है। रिवायत में मज़कूर है कि हश्र के रोज़ मुहम्मद صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की बेटी फ़ातिमा رضی اللہ عنہا की आमद का एलान होगा तो अह्ले महशर से कहा जाएगा कि एहतिराम से अपनी निगाहें झुका लो, तसवीर अदब बन जाओ कि शहज़ादीए कौनेन رضی اللہ عنہا तशरीफ़ लाने वाली हैं। हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर ख़तमी मुरत्तब صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم का इर्शादे गिरामी हैं।

اذا كان يوم القيامة نادمناد من وراء الحجاب يا اهل الجمع غضوا ابصاكم عن فاطمه بنت محمد صلى الله عليه وآله وسلم حتى تمر-

**तरजुमा :** रोज़े महशर (दफ़अतन) कोई मुनादि पर्दों के पीछे से एलान करेगा कि ऐ हश्र वालो! अपनी निगाहें नीची कर लो कि फ़ातिमा बिंते मुहम्मद صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (आ रही हैं) हत्ता कि वह तशरीफ़ ले जाएंगी।

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, 3, 153, रक़्मे हदीष - 4768)

शहज़ादीए कौनेन رضی اللہ عنہا का नाम होठों पर आया है तो ऐ चश्म तसवीर ! बहर इहतिराम झुक जा, ज़रा मैदाने हश्र के मंज़र देख कि सूरज सवा नेज़े पर आग बरसा रहा है। नफ़सा-नफ़सी का आलम कोई किसी का पुर्साने हाल नहीं, अहले महशर किसी साइबाने करम के मुतलाशी हैं। हर पैग़मबर की बारगाह में हाज़िर होते हैं लेकिन अल्लाह عزوجل के यह मुक़र्रब बंदे किसी और दरवाज़े पर दस्तक देने की हिदायत फ़रमाते हैं। ऐ चश्म तसव्वुर ! देख

पर्दों के पीछे से मुनादी करने वाला क्या कह रहा है। सुन ! अह्ले महशर को ताकीदन कहा जाता है कि, "शहज़ादीए कौनेन رضي الله عنها तशरीफ़ ला रही हैं। ख़ातूने जन्नत رضي الله عنها की आमद आमद है। तसव्वुरे अदब बन जाओ, इहतिराम से अपनी निगाहें झुका लो और देखो जब तक हुज़ूर ﷺ की बेटी हसनैन करीमैन رضي الله عنهما की अम्मी जान गुज़र जाएं, ख़बरदार ! अपनी निगाहें न उठाना, तारीख़ शाहिद आदिल है कि तक़दीस की यह चादर हुज़ूर ﷺ की लाडली बेटी के सिवा किसी और ख़ातून का मुक़द्दर नहीं बनी। यह तक़द्दुस सिर्फ़ और सिर्फ़ फ़ातिमा अल-ज़हरा رضي الله عنها के ख़साइस का हिस्सा है और सिर्फ़ उन्ही को इस एज़ाज़े ला-ज़वाल का सज़ावार ठहराया गया है।

# 16. क़सीदा दर हाल
# जनाबे सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رضی اللہ عنہا

**- अज़ अल्लामा इक़बाल**

مریم از یك نسبت عیسی عزیز — از سه نسبت حضرت زهرا عزیز

हज़रत ईसा की एक निस्बत से हैं मरियम علیہ السلام अज़ीज़ — और हैं सेह निसबतों से फ़ातिमा رضی اللہ عنہا पैहम अज़ीज़

نور چشم رحمة للعالمین — آن امام اولین و آخرین

रहमतुल्लिल आलमीन की आँख का हैं आप नूर — जो इमामे अव्वलीन व आख़रीन हैं बा-शुऊर

آنکه جان در پیکر گیتی دمید — روزگار تازه آئین آفرید

रूह जिसने पैकरे गीती में डाली है तमाम — इक बना कर करदिया क़ानून इस दुनिया में आम

بانوی آن تاجدار "هل اتی" — مرتضیٰ، مشکل کشا، شیر خدا

ताज-दार हल अता की हैं शरीके ज़िंदगी — मुर्तज़ा मुश्किल कुशा शेरे ख़ुदा यानी अ़ली

پادشاه و کلبه ای ایوان او — یك حسام و یك زره سامان او

बादशाहों में भी इस घर की फ़क़ीरी शान है — एक तलवार एक ज़िरह मौला का यह सामान है

مادر آن مرکز پرکار عشق — مادر آن کاروان سالار عشق

उनकी माँ हैं जिनको कहिये मरकज़ पर कारे इश्क़ — शब्बर व शब्बीर ही हैं कारवाँ सालारे इश्क़

آن یکی شمع شبستان حرم — حافظ جمعیت خیر الامم

हैं वही दर असल एक शमे शबिस्ताने हरम — उम्मत ख़ैरुलउमम के हैं मुहाफ़िज़ बा हशम

تا نشیند آتش پیکار و کین — پشت پا زد بر سر تاج و نگین

की हसन علیہ السلام ने आग ठंडी नफ़रत व पैकार की — तख़्त किया ताज-व-हुकूमत पर भी ठोकर मार दी

وان دگر مولای ابرار جهان — قوت بازوی احرار جهان

दुसरे लख़्ते जिगर मौलाए अबरारे जहाँ — क़ुव्वते इस्लाम हैं बाज़ू-ए-अहरारे जहाँ

در نوای زندگی سوز از حسین — اهل حق حریت آموز از حسین

ज़िंदगी के साज़ में एक सोज़ है शब्बीर से — सीखते हैं लोग आज़ादी की लो शब्बीर से

سیرت فرزندها از امهات — جوهر صدق و وفا از امهات

नेक सीरत बच्चे बन जाते हैं माओं के तुफ़ैल — जौहरे-सिद्क़-व-वफ़ा पाते हैं माओं के तुफ़ैल

مزرع تسلیم را حاصل بتول — مادران را اسوهٔ کامل بتول

फ़ातिमा رضی اللہ عنہا हैं मरज़ी-ए-दावर की खेती का हुसूल — माओं की ख़ातिर है काफ़ि उसवे बिंते रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

بهر محتاجی دلش آنگونه سوخت ‏ ‏ با یهودی چادر خود را فروخت
हैं सख़ी ऐसी को मोहताजों की ख़ातिर बे गुमाँ ‏ ‏ अपनी चादर बेच डाली एक यहूदी के यहाँ

نوری و هم آتشی فرمانبرش ‏ ‏ گم رضایش در رضای شوهرش
जिसके ज़ेरे हुक्म हैं जिन भी फ़रिश्ते भी जनाब ‏ ‏ उसकी मरज़ी मरज़ी-ए-शौहर में गुम है बे-हिसाब

آن ادب پروردهٔ صبر و رضا ‏ ‏ آسیا گردان و لب قرآن سرا
साया-ए-सब्र-व-रज़ा में परवरिश उसकी हुई ‏ ‏ हाथ में चक्की लबों पर क़िराते क़ुरआन रही

گریه های او زبالین بی نیاز ‏ ‏ گوهر افشانده بدامان نماز
इस्तिराहते ख़्वाब और बिस्तर से होकर बे-नियाज़ ‏ ‏ आह-ओ-ज़ारी अश्क-अफ़्शानी से पढती थीं नमाज़

اشك او بر چید جبریل از زمین ‏ ‏ همچو شبنم ریخت بر عرش برین
उनके आँसू इस ज़मीं से चुन के जिब्राईल عليه السلام ने ‏ ‏ हर तरफ़ मानिंदे शबनम अर्श पर बिखरा दिए

رشتهٔ آئین حق زنجیر پاست ‏ ‏ پاس فرمان جناب مصطفی است
वो तो कहिये हुक्मे रब की पाओं में ज़ंजीर है ‏ ‏ मुस्तफ़ा صلى الله عليه وآله وسلم का हर घड़ी फ़रमान दामनगीर है

ورنه گِرد تربتش گردیدمی ‏ ‏ سجده ها بر خاك او پاشیدمی
वर्ना मैं करता तवाफे तुर्बते ज़हरा मुदाम ‏ ‏ और उसकी ख़ाक पर सजदे किया करता दवाम

(नोटः यह मंज़ूम तर्जुमा प्रोफ़ेसर इराक़ रज़ा ज़ैदी, शोबा-ए-फ़ारसी जामिया मिल्लीया, देहली ने किया है। )